RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 | ₹ :20

केशव संवाद

चैत्र-वैशाख विक्रम सम्वत् 2078 (अप्रैल -2021)

बदलता परिदृश्य एवं मीडिया

अप्रैल 2021, चैत्र-वैशाख विक्रम सम्वत् 2078
हिन्दी पंचांग

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				चैत्र कृष्ण चतुर्थी-4 1	चैत्र कृष्ण पंचमी-5,6 2	चैत्र कृष्ण सप्तमी-7 3
चैत्र कृष्ण अष्ठमी-8 4	चैत्र कृष्ण नवमी-9 5	चैत्र कृष्ण दशमी-10 6	चैत्र कृष्ण एकादशी-11 7	चैत्र कृष्ण द्वादशी-12 8	चैत्र कृष्ण त्रयोदशी-13 9	चैत्र कृष्ण चतुर्दशी-14 10
चैत्र कृष्ण चतुर्दशी-14 11	चैत्र आमावस्या 12	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 13	चैत्र शुक्ल द्वितीया-2 14	चैत्र शुक्ल तृतीया-3 15	चैत्र शुक्ल चतुर्थी-4 16	चैत्र शुक्ल पंचमी-5 17
चैत्र शुक्ल षष्ठी-6 18	चैत्र शुक्ल सप्तमी-7 19	चैत्र शुक्ल अष्ठमी-8 20	चैत्र शुक्ल नवमी-9 21	चैत्र शुक्ल दशमी-10 22	चैत्र शुक्ल एकादशी-11 23	चैत्र शुक्ल द्वादशी-12 24
चैत्र शुक्ल त्रयोदशी-13 25	चैत्र शुक्ल चतुर्दशी-14 26	वैशाख पूर्णिमा 27	वैशाख कृष्ण द्वितीया-2 28	वैशाख कृष्ण तृतीया-3 29	वैशाख कृष्ण चतुर्थी-4 30	

अप्रैल 2021 त्यौहार

चैत्र - वैशाख 2078

02 शुक्रवार	रंग पञ्चमी	03 शनिवार	शीतला सप्तमी	04 रविवार	शीतला अष्टमी, बसोड़ा
07 बुधवार	पापमोचिनी एकादशी	09 शुक्रवार	प्रदोष व्रत	11 रविवार	दर्श अमावस्या, अन्वाधान
12 सोमवार	सोमवती अमावस, चैत्र अमावस्या, इष्टि	13 मंगलवार	युगादी, गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रि, चन्द्र दर्शन	14 बुधवार	मेष संक्रान्ति, सोलर नववर्ष
15 बृहस्पतिवार	मत्स्य जयन्ती, गौरी पूजा, गणगौर	17 शनिवार	लक्ष्मी पञ्चमी	18 रविवार	यमुना छठ
21 बुधवार	राम नवमी, स्वामीनारायण जयन्ती	23 शुक्रवार	कामदा एकादशी	24 शनिवार	प्रदोष व्रत
26 सोमवार	अन्वाधान	27 मंगलवार	हनुमान जयन्ती, चैत्र पूर्णिमा, इष्टि	30 शुक्रवार	विकट संकष्टी चतुर्थी

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

अप्रैल, 2021
वर्ष : 21 अंक : 04

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

केशव संवाद पत्रिका प्रमुख
डॉ. प्रियंका सिंह

अंक संपादक
डॉ. अखिलेश मिश्र

संपादक मंडल
डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन नं. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernashodh.com

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

संपादकीय.....04

सरोकारों से मीडिया की विमुखता - प्रो. अनिल निगम.....05

स्वामी दयानंदर सरस्वती - डॉ. प्रदीप कुमार.....07

केंद्रीय बजट 2021-22 एक अवलोकन - प्रो. (डॉ.) मनीश शर्मा.....08

आधुनिक तकनीक से शिक्षा के क्षेत्र में... - डॉ. नीलम महेंद्र.....09

हिन्दू धर्म के षोडस संस्कार - अरूण कुमार सिन्हा.....10

मीडिया जगत की महान प्रतिभा सलमा सुल्तान - डॉ. नीलम कुमारी.....12

चतुष्कोण सुरक्षा संवाद - डॉ. अखिलेश मिश्र.....14

महानगर की चकाचौंध में विलुप्त होता.... -डॉ. महिमा सिंह राठौर.....15

जगदगुरू आदि शंकराचार्य - प्रो. (डॉ.) हरेंद्र सिंह.....17

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - डॉ. प्रियंका सिंह.....20

पुस्तक समीक्षा (भारती की मौलिक एकता) - डॉ. प्रताप निर्भय सिंह.....22

सोशल मीडिया टूलकिट - डॉ. मनमोहन सिंह.....24

एक देश, एक विधान, एक भाषा, एक निशान - डॉ. उर्विजा शर्मा.....26

अराजकता की जद में ओ.टी.टी - डॉ. यशार्थ मंजुल.....27

राष्ट्रीय पुनरूद्धार और सामाजिक सरोकार... - डॉ. रीना शर्मा.....29

पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप - नेहा कक्कड़.....30

महिलाएं और आत्मनिर्भरता - डॉ. दीक्षिता अजवानी.....32

केशव संवाद मार्च अंक की समीक्षा एवं विमोचन - डॉ. उर्विजा शर्मा.....33

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी की जयंती - महावीर सिंघल.....34

संपादकीय.....

परिवर्तन प्रकृति का शास्वत नियम है। जिस समाज में बदली परिस्थितियों के अनुसार अपने को समायोजित करने की क्षमता नहीं होती है तो उसमें जड़ता आना स्वाभाविक है। इसलिए भारतीय परंपरा एवं संस्कृति में स्थैतिकी के बजाय चरेवेति चरेवेति को प्राथमिकता दी गई है। परिवर्तन स्वत: स्फूर्त एवं उत्प्रेरित दोनों प्रकार का हो सकता है। स्वत: स्फूर्त परिवर्तन से समायोजन की क्षमता समाज में अंतर्निहित होती है क्योंकि, यह समाज के विभिन्न घटकों के परिवर्तन की गति के अंतराल में असंतुलन के कारण होता है। जबकि उत्प्रेरित परिवर्तन समाज के बाहरी संरचना से आता है एवं इससे उत्पन्न असंतुलन से समायोजन में काफी समय लग सकता है। इस दौरान समाज में संघर्ष एवं विरोधाभास के तत्व उभर सकते हैं ।

मीडिया, समाज का दर्पण एवं लोकतन्त्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। हाल में पूंजी के विस्तार, तकनीकी में नवोन्मेष तथा नवप्रवर्तन का प्रभाव समाज एवं मीडिया दोनों पर पड़ा है। लोगों को अब लगने लगा है कि मीडिया समाज का दर्पण न होकर, जन सरोकार से दूर हो रहा है एवं अपने आकाओं के निर्देश पर अपने एजेंडे को समाज पर अध्यारोपित करने की कोशिश में है। इसमें अनैतिक हथकंडे जैसे पीत पत्रकारिता, एजेंडा पत्रकारिता, फेक न्यूज का सहारा लेने में भी उसको बिल्कुल हिचक नहीं है। इस उत्प्रेरित परिवर्तन से उपजी व्यवस्था में नि: संदेह मीडिया से समाज को सकारात्मक भूमिका की अपेक्षा है ।

भारतीय संसद द्वारा हालिया पारित कानूनों कृषि उपज वितरण भंडारण से संबंधित, नागरिकता कानून, तीन तलाक इत्यादि के विरोध में न केवल अंतर्राष्ट्रीय मुख्यधारा की मीडिया बल्कि फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब हेतु टूलकिट के माध्यम से भी सोशल मीडिया का जिस प्रकार दुरुपयोग भारत विरोधी एजेंडा चलाने में किया जा रहा है वह समाज एवं सरकार के लिए चिंता का विषय है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस एजेंडे के पीछे न केवल सरकार की छवि को मालिन करना है बल्कि, भारतीय संसद को गैर निष्पक्ष बताना भी है। वहीं, ओटीटी प्लेटफार्म पर सृजनात्मक स्वतंत्रता की आड़ में भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर निरंतर हमले किए जा रहे है। सरकार एवं समाज को गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

कोरोना के कारण वैश्विक परिदृश्य एवं वैश्विक आर्थिक क्रम में बड़ा परिवर्तन संभावित है। क्वाड, जी-20, जी-8, एवं अन्य वैश्विक प्लेटफॉम पर भारत की अग्रणी भूमिका सर्वमान्य हो रही है ।

रिकार्ड कम समय में भारत द्वारा उत्पादित सबसे सस्ती एवं प्रभावी वैक्सीन मानवता के लिए संजीवनी साबित हो रही है। 'सर्वे संतु निरामया' की सदियों पुरानी परंपरा का पालन करते हुए भारत ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के साथ साथ विश्व के लगभग 153 देशों को अब तक 6 करोड़ से अधिक वैक्सीन के डोज का निर्यात किया है ।

भारत का यह कदम न केवल वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट को रोकने में मदद करेगा बल्कि, दुनिया में फैली अनिश्चितता एवं निराशा के वातावरण से विश्व को राहत देगा। दुर्भाग्य से भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों मीडिया में भारत के इस कदम को अपेक्षित स्थान नहीं दिया चौथी स्तंभ के रूप में मीडिया से आशा की जाती है को वो निष्पक्ष रूप से देश के गौरव को सब के सामने परोसे ना कि मुट्ठी भर लोगों द्वारा चलाए जा रहे किसान आंदोलन एवं सामाजिक विद्वेष को बढ़ाने वाली खबरें। अब देश के सुधी पाठकों, दर्शकों एवं मीडिया से जुड़े लोगों को देश विरोधी एजेंडे को चलाने वाले लोगों को पहचानना होगा एवं उसका सोशल एवं अन्य मीडिया पर उचित प्रतिकार करना होगा ।

डॉ. अखिलेश मिश्र
अंक संपादक

मंथन

सरोकारों से मीडिया की विमुखता

डॉ. अनिल निगम
डीन, पत्रकारिता तथा जनसंचार विभाग
आईआईएमटी कॉलेज, ग्रेटर नोएडा

भारत के प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' का ध्येय वाक्य था 'हिंदुस्थानियों के हित का हेत'। मीडिया का प्रमुख ध्येय आज भी यही है। लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तम्भ कहा जाता है। आज सूचना और प्रौद्योगिकी की क्रांति का युग है। नागरिकों के पास सूचनाओं का माध्यम मीडिया ही है। यही कारण है कि अब मीडिया की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण है। मीडिया से लोगों की ढेरों अपेक्षाएं हैं। वे चाहते हैं कि मीडिया एक सजग प्रहरी की तरह सत्यता की कसौटी पर कसी हुई खबरें उनके समक्ष प्रस्तुत करे। लेकिन, पिछले कुछ अरसे से मीडिया में फेक कंटेंट की बाढ़ सी आ गई है और अनवरत रूप से गैर जिम्मेदाराना पत्रकारिता के उदाहरण देखने को मिल रहे हैं।

यही नहीं, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया में तथ्यपरक समाचारों और तर्कपूर्ण संपादकीय सामग्री का घोर अभाव देखने को मिल रहा है। समाचारों में विचारों का अतिक्रमण भी बहुत तेजी से बढ़ा है। यह अत्यंत चिंता का विषय है। ऐसे में हमारे मन–मस्तिष्क में कई प्रश्न उठना लाजमी हैं। क्या मीडिया का कार्य समाचारों और सूचनाओं को महज प्रकाशित और संचारित करने तक सीमित है? खबरों का जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ता है? आज मीडिया बाजारवाद से कितना प्रभावित है? क्या मूल्य परक पत्रकारिता का क्षरण हो चुका है? प्रश्न यह भी है कि क्या मीडिया लोकतंत्र में चौथे खम्भे की सशक्त भूमिका निभाने में सक्षम है?

विदित है कि देश की आजादी के पूर्व हमारे देश में पत्रकारिता पूर्ण रूप से मिशनरी थी। राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबू विष्णु राव पराड़कर, महात्मा गांधी जैसे अनेक महान स्वतंत्रता सेनानी पत्रकार थे। उनका एक मात्र उद्देश्य लोगों को जागरूक कर देश को आजादी दिलाना था। लेकिन आजादी के बाद यह मिशन प्रोफेशन और एक उद्योग के रूप में परिवर्तित होता गया। बाजारवाद का रंग मीडिया पर भी चढ़ने लगा। 1990 के दशक में देश में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का पदार्पण हुआ, लेकिन सही स्वरूप में इसका विकास वर्ष 2000 के दशक में हुआ। उसके बाद डिजिटल मीडिया भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाने लगा। पिछले लगभग 15 वर्षों में मीडिया हर घर तक पहुंच चुका है।

आजादी के बाद भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (ए) के तहत देश के हर नागरिक को भाषण और अभिव्यक्ति का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। देश का मीडिया भी इसी के तहत काम करता है। यह भी सच है कि मीडिया ने देश के विकास, प्राकृतिक आपदाओं और आपातकाल के दौरान लोगों तक खबरें पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। कोविड–19 महामारी के दौरान भी मीडिया ने दिलेरी दिखाई। पत्रकारों ने अपनी जान की परवाह किए बगैर घटनाओं की रिपोर्टिंग की। लेकिन इस दौरान उसकी भूमिका को लेकर जबर्दस्त सवाल भी उठे। डिजीटल और सोशल मीडिया के अलावा मेन स्ट्रीम मीडिया में भी फेक न्यूज अथवा अफवाह पर आधारित सूचनाओं की भरमार रही। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचार कम और विचारों का प्रवाह अधिक रहा।

निस्संदेह, मीडिया की सबसे बड़ी जवाबदेही पाठकों और दर्शकों के प्रति तो होती ही है लेकिन उसकी एक और अहम जिम्मेदारी यह भी है कि उसके समाचारों से समाज में सामाजिक समरसता और भाई चारे का माहौल बना रहे। यही नहीं, राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को हतोत्साहित कर एक स्वस्थिर वातावरण तैयार करना भी मीडिया

की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

यह विचारणीय विषय है कि आखिर मीडिया के स्तर में गिरावट आने का कारण क्या है? वह अपनी जवाबदेही से दूर क्यों भाग रहा है? ध्यातव्य है कि भारत में पत्रकारिता के विद्यार्थियों को हमेशा यह पढ़ाया जाता रहा है कि 'कुत्ता आदमी को काटे' तो खबर नहीं है लेकिन 'आदमी कुत्ते को काटे' तो वह खबर है। कहने का आशय यह है कि नकारात्मक सूचना ही खबर होती है। पाश्चात्य उद्धरणों को पढ़कर पत्रकार बनने वाले विद्यार्थी हमेशा इसी सोच के साथ पत्रकारिता के मैदान में उतरते हैं और पत्रकार भी इस आवरण से बाहर नहीं निकल पाते।

जवाबदेही से दूर भागने का दूसरा कारण है मीडिया में बाजारवाद का हावी होना। आज हर मीडिया संस्थान टीआरपी अथवा प्रसार संख्या की होड़ में मूल्य बोध पत्रकारिता करने की जगह सनसनीखेज अथवा सबसे ज्यादा बिकने वाली खबरों के पीछे भागने लगा है। इसके पीछे हवाला इस बात का दिया जाता है कि मीडिया वह दिखाता और छापता है जो दर्शक या पाठक देखना अथवा पढ़ना चाहता है, जबकि सच्चाई इससे कोसों दूर है। कोरोनाकाल में सोशल मीडिया के अलावा मेनस्ट्रीम मीडिया में फेक न्यूज काफी चली, जिसके कारण अनेक मजदूरों की जानें चली गईं और अफरा–तफरी का माहौल बन गया। किसान आंदोलन के संबंध में भी कई खबरें ऐसी चलाई गईं जिससे देश का माहौल खराब हुआ।

'मीडिया समाज का दर्पण' है। मीडिया में खबरों की निष्पक्षता और सत्यता को परखने और उसका परीक्षण करने की श्रेष्ठ परंपरा रही है। खबर हमेशा 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' की अवधारणा पर आधारित होनी चाहिए। पर अफसोस मीडिया बाजारवाद और विचारवाद के दबाव में है, इसलिए वह अपने सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकारों को समुचित तरीके से नहीं निभा पा रहा है। मीडिया का नेतृत्वं करने वाले संस्थानों और पत्रकारों को अपने कार्यों और दायित्वों का पुनरावलोकन करना चाहिए ताकि वे समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सकें। ■

राम काज किन्हे बिनु, मोहि कहां विश्राम

श्रीराम मेरे अर्न्तात्मा से जुडे हैं भगवान श्रीराम की कृपा से मैं इस पूरे आन्दोलन से जुडा रहा हूं। जब श्रीराम मंदिर समपर्ण निधि अभियान आया तो सोचा कि कोरोना काल से समाज गुजर रहा है अपनी नित्य आवश्यक वस्तुओं के लिए आम आदमी संघर्ष कर रहा है, तो कैसे हो पायेगा ये अभियान, पर संगठन ने कहा प्रत्येक हिन्दू परिवार तक जाना है और सम्पर्क करना है। श्रीराम का नाम लें जय उद्घोष कर "समपर्ण निधि" अभियान प्रारम्भ हुआ तो आश्चर्य हुआ, जब लोगों के सम्पर्क में आये तो वे इंतजार कर रहे थे अपने आराध्य श्रीराम के मंदिर में सहयोग के लिए, कही पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया तो कहीं पर आरती उतार कर स्वागत हुआ तो कहीं चरण धोकर। मानों जैसे मां शबरी श्रीराम का इंतजार कर रही है वर्षों से, कि कब श्री राम आयेंगे। इसी प्रकार समपर्ण देने वाले मानस भी इंतजार कर रहे थे कि उनके आराध्य श्रीराम भक्तों की टोली उनके घरों पर कब पधारेगी। इस सहयोग के लिए किसी भी परिवार में नकारात्कता नहीं थी और उत्साह ऐसा जैसे कोई उत्सव हो। वाकई यह उत्सव ही तो है, राष्ट्र निर्माण का, धर्म की आस्था का इतने लम्बे संघर्ष के बाद खुली हवा में आजादी का, मानो समाज में होड़ लगी हो अपना समपर्ण निधि भेजने की कोई भी व्यक्ति हो, उसका आधार कुछ भी हो, किसी भी उम्र के हो, सब उत्साह से भरे हुए है। सड़क पर भिक्षा मांगकर जीवन यापन करने वाला मानस भी श्रीराम भक्तों की टोली को देखकर पूछना कि क्या हो रहा हैं भाई, टोली द्वारा बताने पर कि श्रीराम मंदिर निर्माण में सहयोग, तो उसका मार्मिक शब्दों में पूछना कि क्या मैं भी सहयोग कर सकता हूं ऐसा समपर्ण ऐसा उत्साह घरों पर काम कर अपना जीवन यापन करने वाली महिलाओं में भी था। यह श्रीराम का ही तो चमत्कार था। हर हिन्दू तैयार था श्रीराम के मंदिर में सहयोग के लिए, यह एक अद्भुत अनुभव था सालों तक इंतजार किया इस पल का और श्रीराम ने मौका दिया इस काम में सहयोग करने का और समपर्ण का। जय श्रीराम -**सुधीर अग्रवाल, हापुड़**

केशव संवाद पत्रिका का मार्च 2021 का अंक मिला इस अंक में "भारतीय संस्कृति के सामाजिक सरोकार" लेख द्वारा लेखिका ने अपने विचारों को बड़ी ही सुव्यवस्थित व मौलिक रूप से संकलित किया है। लेकिन विषय के व्यापक परिपेक्ष्य में कहीं कहीं कुछ विचारों को बहुत ही सूक्ष्म रूप में लिखा है। जिससे विषय की गंभीरता पर उनका व्यापक एवं गूढ़ विचारों का ज्ञान पूरी तरह से दर्शित नहीं हो रहा है शायद यह उनके लेख की परिसीमा का कारण भी है। जैसे – "वसुधैव कुटुम्बकम्"

सनातन धर्म का मूल संस्कार एवं विचारधारा है जो महा उपनिषद सहित कई ग्रन्थों में लिखित है। इसका अर्थ है – धरती ही परिवार है (वसुधा एवं कुटुम्बकम्) यह वाक्य हमारी भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।

अयंनिजः परोवेति गणना लघुचेतसाम।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। (महोपनिषद अध्याय 4, श्लोक 71)

अर्थ – यह अपना बन्धु है और यह अपना बन्धु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों का तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

यह संकलन भारतीय संस्कृति व सभ्यता की पराधीनता की मौलिक प्रमाणिकता को दर्शाता है। - **मोनिका चौहान, नोएडा**

ऐतिहासिक व्यक्तित्व

स्वामी दयानंद सरस्वती

डॉ. प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
सत्यवती कॉलेज (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय

स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय महापुरुषों की श्रृंखला में पहले ऐसे महामानव थे जिन्होंने वेदों को सत्य विधाओं की पुस्तक कहा ही नहीं बल्कि सिद्ध भी किया। स्वामी जी का जन्म 12 फरवरी टंकारा में सन् 1824 को मोरबी के पास काठियापवाड़ क्षेत्र, गुजरात में हुआ था। उनके पिता करशन लाल जी एक कर–कलैक्टर होने के साथ–साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। मां यशोदाबाई एक सफल गृहणी थी। दयानंद जी के बचपन का नाम मूलशंकर था और उनका बचपन बहुत ही आराम से बीता। वे एक पण्डित बनना चाहते थे इसलिए उन्होंने संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में ध्यान लगाया। वेदों के प्रति उनकी निष्ठा और भक्ति इसी कारण थी कि वेद मानव की स्वतंत्र चिन्तन शक्ति के द्वारों को खोलकर उसे एक अनन्त आकाश प्रदान करते हैं।

ज्ञान विज्ञान का मूल स्रोत सर्वज्ञ ईश्वर का दिया हुआ वेद ज्ञान था। इन दोनों के बिना कोई भी मनुष्य इतने महान कार्य नहीं कर सकता। वेदों से स्वतंत्र चिंतन शक्ति पाने वाले उदार चेता दयानन्द जी अपनी मातृ–भूमि को पराधीनता में जकड़ा देखकर चुप नहीं रह सके। अंग्रेजी शासन के सम्बंध में स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश से घोषणा की थी कि मतमातान्तरों के आग्रह से रहित, अपने पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज पूर्ण दुखदायक है।

जीवन के हर क्षेत्र में स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति देने वाले सन्यासी द्वारा देश की स्वतंत्रता का यह शंखनाद ही आगे चलकर भारत के जन–मन में गूंजने लगा। स्वाधीनता के इतिहास में जितने भी आन्दोलन हुए उनके बीज स्वामी जी अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से डाल गये थे। स्वदेशी आन्दोलन के मूल सूत्रधार भी महर्षि दयानन्द ही थे। उन्होंने लिखा है – "जब परदेशी हमारे देश में व्यापार करेंगे तो दारिद्रय और दुख के बिना दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।" स्वदेशी भावना को जगाते हुए स्वामी जी लिखते है "इतने से ही समझ लो कि अंग्रेज अपने देश के जूते का जितना मान करते हैं उतना अन्य देशों के मनुष्यों का नहीं करते।" स्वामी जी

की इसी स्वदेशी भावना का परिणाम था कि भारत में सबसे पहले सन् 1879 में आर्य समाज, लाहौर के सदस्यों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का सामूहिक संकल्प लिया था। इसका विवरण 14 अगस्त 1879 के अंग्रेजी अखबार स्टेट्समेन में भी मिलता है।

सन् 1911 के जनगणना अधिकारी ने स्वामी जी के विषय में लिखा है कि "दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक नही थे, वह एक महान देशभक्त थे।" आगे वह लिखते है कि आर्य समाज के सिद्धान्तों में देश प्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्यशिक्षा समानरूप से भारत की प्राचीन गौरव को बढ़ावा देते है। 'सत्यार्थ प्रकाश' ने अनेकों क्रांतिकारियों पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, दादाभाई नैरोजी, श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, सावरकर जी आदि को प्रेरित किया। मि. शिरोल ने सत्यार्थ प्रकाश को ब्रिटिश राज की जड़े खोदने वाला ग्रन्थ कहा था। वास्तव में स्वामी दयानन्द स्वतंत्रता अभियान के प्रथम और प्रबल संवाहक थे। स्वराज और स्वतंत्रता की मूल अवधारणा हमें उन्हीं से प्राप्त हुई थी।

सांसारिक मोहमाया और अपने–पराए की भावना से बहुत आगे निकल चुका यह वीतराग संन्यासी बताते हैं कि फर्रुखाबाद के प्रवास में देर रात तक सो न सका। अचानक शिष्य लक्ष्मण की आंखें खुल गईं, वह थोड़ा व्याकुल होकर बोला– 'महाराज! आप सोए नहीं, क्या कहीं पीड़ा है? कहें तो हाथ–पांव या सर दबा दूं। या कोई औषधि लाकर दूं।'

स्वामी जी एक गहरी श्वास छोड़ते हुए बोले– 'लक्ष्मण! यह वेदना औषधोपचार से ठीक होने वाली नहीं है। यह तो भारतीयों के संबंध में चिंता के कारण चित्त में उभरती है। मेरी अब यह इच्छा है कि राजा–महाराजाओं को सन्मार्ग पर लाकर उनका सुधार करूं। आर्य जाति को एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र में बांधने की मेरी प्रबल इच्छा है।'

महर्षि दयानंद सरस्वती वेद मंत्रों का भाष्य करते हुए भी ईश्वर से यह प्रार्थना करना नहीं भूलते थे कि हे जगदीश्वर! विदेशी शासक कभी हमारे ऊपर राज्य न करें। महर्षि का संपूर्ण जीवन की देशभक्ति का विशुद्ध अभियान था। मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या ने पूछा कि महाराज भारत का पूर्ण हित कैसे हो सकता है?

महर्षि दयानन्द के हृदय में आदर्शवाद की उच्च भावना, यथार्थवादी मार्ग अपनाने की सहज प्रवृत्ति, मातृभूमि की नियति को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह, धार्मिक–सामाजिक–आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से युगानुकूल चिन्तन करने की तीव्र इच्छा तथा आर्यावर्तीय (भारतीय) जनता में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जगाने की भावना थी। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा करने की परवाह किये बिना आर्यावर्त (भारत) के हिन्दू समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बना लिया था। स्वामी जी ने एक बार कहा कि 'एक धर्म, एक भाव और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और उन्नति असंभव है। ■

बजट

केंद्रीय बजट 2021-2022 : एक अवलोकन

प्रो. (डॉ.) मनीष शर्मा
प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
उच्चशिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

भारतीय गणराज्य का वार्षिक बजट होता है, जिसे औपनिवेशिक परम्परा के कारण पहले बजट 28 फरवरी को प्रस्तुत होता था, परन्तु 2017 के पश्चात अब बजट 1 फरवरी को प्रस्तुत किया जाता है। वर्तमान वित्तीय वर्ष 2021–2022 के लिए लोकसभा के सदन में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत केन्द्रीय बजट अपने आप में एक ऐतिहासिक बजट रहा है क्योंकि पहली बार देश मे डिजिटल बजट प्रस्तुत किया गया है और ऐतिहासिक इसलिए भी क्योंकि पिछले 100 वर्षों में भारतवर्ष कोविड–19 जैसे महामारी या प्राकृतिक आपदा की चपेट में कभी नहीं आया था न हीं उसकी आर्थिक स्थिति इस तरह से गड़बड़ाई। एक तरफ जहां लॉकडाउन की वजह से मांग में कमी के साथ–साथ पूर्ति व्यवस्था भी चरमरा गई तो दूसरी तरफ सामान्य लोगों के पास रोजमर्रा के सामान्य मदों पर खर्च करने के लायक पैसे तक नहीं बचे, तो ऐसे में मध्यम वर्ग के पास खर्च करने के लिए कुछ नहीं बचा ऐसी स्थिति में अगर सीधे हस्तांतरण (DBT) के माध्यम से निम्न आय वर्ग के लोगों को मौद्रिक सहायता उपलब्ध करा भी दी जाती है तो वह बचत में परिवर्तित हो जाता जो आर्थिक स्थिति से उबरने में सहायक नहीं होता। ऐसे में इस वित्तीय वर्ष मे एक ऐसे बजट की जरूरत थी जहां कुल मांग मे बढ़ोतरी हो जो साथ ही निजी व विदेशी क्षेत्र के निवेशकों के लिए उत्प्रेरक का कार्य भी करें। यह बजट वस्तुतः दूरगामी सोच वाला बजट रहा जहां अधोसंरचना में निवेश पर ज्यादा ध्यान रखा गया है ताकि भारत आने वाले वर्षों में न सिर्फ इस विषम आर्थिक परिस्थिति से उभरे बल्कि आम जनता में मांग में वृद्धि व रोजगार में वृद्धि की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति विश्वास बढ़े। इस बजट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि सरकार ने विनिवेश की नीति को बाजार की क्षमता या दक्षता को बढ़ाने के लिए हथियार के रूप मे अपनाया है। यह बजट यह भी इंगित करता है कि विनिवेश की नीति शासन के पास उपलब्ध अनुपयोगी संपत्ति को मौद्रितिकरण करना व सरकारी नियंत्रण में ढील देते हुए विदेशी व निजी क्षेत्र के निवेशकों को अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए आकर्षित करना भी रहा है। इस बजट के माध्यम से एक मजबूत सुशासन व्यवस्था के साथ इन निजी क्षेत्रों के द्वारा जटिल आर्थिक स्थिति से उबरने की कोशिश की जा रही है। अतः यह बजट 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' पर विशेष जोर देने के लिए भी जाना जाएगा।

अगर इसे विशुद्ध आर्थिक दृष्टिकोण से देखे तो सरकार द्वारा वित्त वर्ष 2021–22 में 34,83,236 करोड़ रुपये व्यय करने का प्रस्ताव किया गया है। इसके साथ ही सदन के पटल पर यह बताया गया कि 2020–21 में 34,50,305 करोड़ रुपये खर्च किए गए जो 2020–21 के बजट अनुमान से 13 प्रतिशत अधिक है।

वर्तमान बजट के अनुसार सरकार को 2021–22 के वित्त वर्ष में 19,76,424 करोड़ रूपये (ऋणेत्तर प्राप्तियां) प्राप्त होने का अनुमान है जो 2020–21 के संशोधित अनुमानों से 23 प्रतिशत अधिक है। 2020–21 में, प्राप्तियों के लिए संशोधित अनुमान बजट अनुमानों से 29 प्रतिशत कम था यह कमी मुख्य रूप से कोरोना के प्रभाव से उत्पन्न हुई है।

वर्तमान मे किसान आंदोलन की वजह से किसानों पर सरकार के सरोकार कि प्रतीक्षा आम जन मे थी जिसे साकार करते हुए बजट में किसानों की आय में सुधार के उद्देश्य से फसल कटाई के बाद के बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए 100 प्रतिशत तक के कृषि आधारभूत ढांचा एवं विकास उपकर का प्रस्ताव किया है।

यद्यपि आम व्यक्ति कोरोना महामारी की वजह से परेशानी व आर्थिक तंगी से जूझ रहा था और आय कर मे छूट की उम्मीद कर रहा था परंतु आय कर तथा निगमों के आयकर की दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। कंपनी अधिनियम, 2013 को संशोधित कर लघु कंपनियों (स्माल कंपनियों) की परिभाषा को संशोधित किया गया है। स्माल कंपनियों के लिए पूंजी (50 लाख रुपये से 2 करोड़ रुपये) और वार्षिक टर्नओवर (2 करोड़ रुपये से 20 करोड़ रुपये) तक की सीमा की गई है।

वर्तमान बजट को 1991 के उदारीकरण व निजीकरण के दौर के पश्चात दूसरे चरण के रूप मे देखा जा रहा है क्योंकि विदेशी निवेशकों, विनिवेश प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा में वृद्धि के साथ निजी क्षेत्रों से सहयोग लेकर अधो संरचनात्मक विकास की परिकल्पना की गयी है। ऐसे महामारी के वक्त आर्थिक तंगी से उबरना एक कठिन कार्य है और इस कार्य में आम नागरिक का एक बड़ा योगदान होता है। सामान्य दिनों में शासन से बजट के माध्यम से आम लोगों की अपेक्षा होना स्वाभाविक है पर ऐसी कठिन घड़ी में आम जनता का भी कर्तव्य हो जाता है कि वह शासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी छोटी–छोटी जरूरतों को त्याग कर राष्ट्रहित में अपने आप को शामिल करें। भारतीय संस्कृति में हमेशा से ही सर्वजन के कल्याण की भावना ही रही है, हमारे देश में लोकतंत्र की जड़े काफी गहरी और पुरानी है जहां समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद का अद्भुत व अनोखा मिश्रण मिलता है, जो विदेशों में वर्णित व परिभाषित समाजवाद, साम्यवाद, व पूंजीवाद से अलग है। जिसका अनुभव इस महामारी के वक्त आम जनों में भी दिखा। सरकारों के साथ साथ आम आदमी भी जरूरतमंद लोगों की मदद करता नजर आया ऐसे में इस बजट में दिए हुए प्रावधानों के साथ आम आदमी भी पूरी निष्ठा से शासन के साथ खड़ा हो सुशासन में मदद करें। 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' का कड़ाई से पालन हो तो निश्चित रूप से आने वाले दिनों में देश विश्व की एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरेगी जिसकी ओर इशारा यह बजट भरपूर तरीके से करता है। ■

आधुनिक तकनीक से शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव

डॉ. नीलम महेंद्र
वरिष्ठ स्तंभकार

देश भर में बोर्ड परीक्षाओं की घोषणा के साथ ही वर्तमान शिक्षण सत्र समाप्ति की ओर है। आजाद भारत के इतिहास में यह पहला ऐसा सत्र है जो स्कूल से नहीं बल्कि ऑनलाइन संचालित हुआ है। दरअसल कोरोना काल वाकई में सभी के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है, बच्चों के लिए भी, उनके शिक्षकों के लिए भी और उनके अभिभावकों के लिए भी।

लेकिन इसके बावजूद अगर पीछे मुड़कर बीते हुए साल को एक सकारात्मक नजरिए से देखें तो कह सकते हैं कि कोरोना काल भले ही एक चुनौती के रूप में आया हो परन्तु यह काल अनजाने में शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के लिए अनेक नई राहें और अवसर भी लेकर आया है।

देखा जाए तो जीतने वाले और हारने वाले में यही तो अंतर होता है कि हारने वाला संकट के आगे घुटने टेक देता है जबकि जीतने वाला उस संकट में अवसर तलाश लेता है। इसलिए अगर यह कहा जाए कि कोरोना काल में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि आधुनिक टेक्नोलॉजी के दम पर छात्रों के सामने शिक्षा हासिल करने के विभिन्न मंच और माध्यम उपलब्ध हैं। स्कूल की कक्षाएं जो ऑनलाइन चल ही रही थीं उसके अलावा छात्रों के पास ये विकल्प भी था कि वे किस विषय को किस से और कब पढ़ना चाहते हैं।

यूट्यूब पर विभिन्न विषयों के विभिन्न जानकारों द्वारा अनेक वीडियो आसानी से उपलब्ध हैं वो भी बिना किसी शुल्क के। इतना ही नहीं बल्कि यूट्यूब पर तो एक ही टॉपिक पर अनेकों शिक्षकों के अनेकों वीडियो बेहद सरलता से मिल जाते हैं। कल्पना कीजिए जो छात्र पहले स्कूल जाता था फिर घर आकर खाना भी मुश्किल से खा पाता था कि उसके कोचिंग क्लास जाने का समय हो जाता था। आने जाने में समय लगने के अलावा वापस आने के बाद उसे स्कूल और कोचिंग दोनों का होमवर्क भी करना होता था। इसके अलावा कोचिंग क्लास में अगर किसी शिक्षक का पढ़ाने का तरीका पसन्द नहीं आ रहा तो भी मजबूरी में उसी से पढ़ना पड़ता था क्योंकि सालभर की फीस जो पहले से दे दी होती थी।

लेकिन वो छात्र घर बैठे अपनी सुविधानुसार समय पर अपनी पसंद के शिक्षक से पढ़ सकता है और तो और अगर वो चाहे तो दूसरी लिंक पर जाकर किसी अन्य शिक्षक से भी पढ़ सकता है जिसके लिए उसे कोई शुल्क भी नहीं देना पड़ता है। सोचिए कि एक छात्र के लिए इससे बेहतर क्या हो सकता है? शायद कुछ नहीं। शायद इसलिए छात्रों ने भी इस अवसर का भरपूर फायदा उठाया।

परिणामस्वरूप कोरोना काल का यह काल युवा पीढ़ी में सकारात्मक बदलाव के उस दौर का साक्षी बना कि जब यूट्यूब पर फिल्मी नॉन फिल्मी गानों के बजाए एजुकेशनल वीडियो ट्रेंड करने लगे और यूट्यूब ने शिक्षा के लेटेस्ट प्लेटफार्म का रूप ले लिया।

लेकिन यहाँ यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि अब आधुनिक तकनीक से शिक्षा हासिल करने के लिए सिर्फ यूट्यूब ही एकमात्र प्लेटफार्म नहीं रह गया है। सरकार ने भी वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए और विशेष रूप से उन छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए जो आर्थिक रूप से उतने सक्षम नहीं हैं या फिर जिन्हें लैपटॉप, स्मार्ट फोन, इंटरनेट, ब्रॉडबैंड जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, उन तक भी शिक्षा की उपलब्धता हो इस हेतु अनेक सरल माध्यमों से शिक्षा देने के उद्देश्य से विभिन्न कदम उठाए हैं।

जैसे ई–पाठशाला पोर्टल जिसमें कक्षा एक से बारहवीं तक की एनसीईआरटी की किताबें और संबंधित सामग्री उपलब्ध है। 'स्वयं पोर्टल' जिस पर 9 वीं कक्षा से लेकर पोस्ट ग्रेजुएशन तक पढ़ाए जाने वाले विभिन्न एकेडमिक कोर्सेस और डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध हैं।

इसी प्रकार प्रधानमंत्री ई–विद्या योजना के तहत डिजिटल शिक्षा एजुकेशन चैनल, कम्युनिटी रेडियो जैसे माध्यमों से दी जाएगी जिसमें हर कक्षा के लिए एक चौनल होगा। दिल्ली सरकार ने तो विश्व का पहला वर्चुअल स्कूल खोलने की घोषणा कर दी है जहाँ ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई कराई जाएगी और इसमें देश भर के बच्चे पढ़ सकेंगे। लेकिन पढ़ाई के अलावा कोविड 19 की मौजूदा परिस्थितियों में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'मनोदर्पण' पहल की भी शुरूआत की गई है जो छात्रों शिक्षकों और अभिभावकों के मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण के लिए एक स्थायी मनोसामाजिक सहायता प्रणाली के रूप में कार्य करेगा। इन परिस्थितियों ने इस कहावत को चरितार्थ कर दिया है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है।

छात्रों के पास ज्ञान और शिक्षा दोनों के असीमित स्रोत मौजूद हैं जो पहले भी थे लेकिन शायद अव्यवहारिक प्रतीत होते थे कोरोना काल ने उन्हें प्रासंगिक बना दिया। ■

पौराणिक कथाएं

हिन्दू धर्म के षोडश संस्कार

अरूण कुमार सिन्हा
वरिष्ठ लेखक, चिंतक एवं समाजसेवी

सनातन धर्म को हिन्दू धर्म का दूसरा नाम भी दिया जाता है। प्राचीन सभ्यता के कई अवशेष सिंधु घाटी में प्राप्त होते हैं। विद्वानों का मत है कि ये अवशेष हिन्दू धर्म से ही सम्बन्धित हैं। इनमें देवताओं की मूर्तियाँ और कुछ मुद्रायें विशेष हैं। मुस्लिम शासन हो जाने के कारण संस्कृत भाषा का प्रयोग धीरे–धीरे कम से कम होता गया और सनातन धर्म भाषा के अभाव में अपनी चमक खोने सी लगी परन्तु सनातन या यूँ कहें हिन्दू धर्म में सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए जो समय समय पर बदलाव होते रहे उस से बाहर से बहुत आघात होने के बाद भी हिन्दू धर्म अपने अन्दर निहित शक्ति से जीवित रही। सनातन धर्मका पर्याय ही हिन्दू धर्म है। हाँ, लोगों का मानना है कि सनातन धर्म में गुत्थियाँ हैं और वो भी उलझी हुई हैं और इसी कारण इसे कई बार कठिन और मुश्किल समझा जाता है। परन्तु सच्चाई तो इस से कोसों दूर है। हाँ, इसके इतने आयाम और पहलू हैं कि भ्रमित हो जाना आम है। हिन्दू धर्म में आचरण के सख्त नियम हैं जिनका धर्मावलम्बियों को प्रतिदिन पालन करने का आग्रह धर्मग्रंथों में उल्लेखित है। यही आचरण सनातन हिन्दू धर्म का नैतिक अनुशासन है। सनातन धर्म किसी एक के विचारों की उपज नहीं है और ना ही किसी विशेष परिस्थिति में इसका प्रादुर्भाव हुआ है बल्कि अनादि काल से इसके विचार प्रवाहित हो रहे हैं। धर्म के विचार किसी के पोषक भी नहीं हैं।

ज्यादातर लोगों का मानना है कि विज्ञान की कसौटी पर धर्म के रीति–रिवाज और विचार खरे नहीं उतरते और धर्म के अनेकानेक विश्वास विज्ञान के सिद्धांतों के सामने टिक नहीं पाते परन्तु वेदों में वर्णित सत्य से विज्ञान सहमत दिखाई देता है क्योंकि हिन्दू धर्म की सभी व्याख्याएँ वैज्ञानिक आधार पर ही निर्मित हैं। प्राचीन काल से ही सनातन धर्म के प्रत्येक कार्य संस्कार द्वारा ही प्रारम्भ होते थे और उन्हीं का पालन कर धर्मावलम्बी सांसारिक सुख को भोगते रहे हैं।

हिन्दू धर्म में मानव जीवन के सम्पूर्णकाल को सोलह संस्कारों में विभाजित किया गया है। ये विभाजन वैज्ञानिक आधार की कसौटी पर भी खरी उतरती है। गौतम स्मृति में जीवन चक्र को चालीस संस्कारों में विभाजित करने का उल्लेख है पर धीरे–धीरे सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुकूल संस्कार कम होते गए और अब सोलह ही बचें हैं जिन्हें षोडश संस्कार कहते हैं। धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम को लेकर थोडा मतभेद जरूर है परन्तु प्रचलित संस्कारों के उल्लेखित क्रम इस प्रकार हैं–

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्रासन, चूड़ाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेधन, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशांत, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि।

प्रत्येक संस्कारों के संक्षिप्त विवरण निम्न हैं –

गर्भाधान - गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने पर उत्तम संतान की इच्छा रखने वाले जोड़े को अपने तन और मन को पवित्र कर यह संस्कार करने का विधान है। प्राचीन काल में यह अति महत्वपूर्ण संस्कार समझा जाता था।

पुंसवन - गर्भस्थित शिशु के मानसिक विकास के लिए इस संस्कार को किया जाता है। माता द्वारा गर्भधारण के दूसरे या तीसरे महीने में संस्कार करने की परम्परा है। शुभ नक्षत्र में होने वाले इस संस्कार को अनिवार्य माना गया है।

सीमन्तोन्नयन - गर्भस्थ शिशु एवं माता की रक्षा इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्कार द्वारा माता का मन प्रसन्न रखना भी एक प्रयोजन होता है। वैज्ञानिक और चिकित्सा शास्त्र में भी कहा गया है कि गर्भवती महिला को प्रसन्न रखना चाहिए जो बच्चे के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त है। यह संस्कार गर्भधारण के आठवें महीने में करने की परम्परा है।

जातकर्म - नवजात शिशु के नाल काटने से पहले इस संस्कार को किया जाता है। शहद एवं घी, को वैदिक मंत्रों के जाप के साथ नवजात शिशु को चटाया जाता है। मान्यता है कि संस्कार द्वारा नवजात शिशु को बुद्धिमान, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवी होने का आशीर्वाद दिया जाता है।

नामकरण - सूतक के दौरान, जो धर्मशास्त्रों के अनुसार छः से दस दिन का माना जाता है, में नवजात शिशु और माता को सब से अलग रखा जाता है। वैज्ञानिक मान्यता भी है कि नवजात शिशु और माँ शारीरिक रूप से कमजोर होते है और उन्हें संक्रमण से बचाना आवश्यक होता है इस कारण प्रारम्भ के दिनों के बाद बच्चे के नामकरण परिवार के लोगों की उपस्थिति में ग्यारहवें दिन शुभ नक्षत्र और शुभ घड़ी में करने का विधान है।

निष्क्रमण - निष्क्रमण का मतलब है बाहर निकलना। शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाई जाती है। वैज्ञानिक आधार है कि शिशु की प्रतिरक्षा प्रणाली काफी कमजोर होती है अतः शिशु को बाहर नहीं निकाला जाता परन्तु जन्म के चौथे महीने के इस संस्कार में शिशु के शरीर को बाहरी वातावरण के संपर्क में लाया जाता है।

अन्नप्राशन - शिशु जन्म से माता के दूध पर आश्रित रह कर शरीर को समर्थ बनाता है परन्तु बढ़ते उम्र के साथ शारीरिक आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं उन्हें पूर्ण करने के लिए शुद्ध, सात्विक एवं पौष्टिक आहार प्रदान करने के लिए अन्नप्राशन संस्कार किया जाता है। सामान्यतः जन्म से छठें महीने में शुभ दिन देखकर किया जाता है। खीर से शिशु के अन्नग्रहण को शुभ माना गया है।

चूड़ाकर्म - शिशु का पहले, तीसरे या पांचवें

वर्ष में मुंडन संस्कार किया जाता है। मुण्डन को ही चूड़ाकर्म संस्कार कहते हैं। मुंडन संस्कार में जन्म के समय के बालों को हटाया जाता है। वैज्ञानिक आधार के अनुसार शिशु के गर्भ के बाल में कई कीटाणु रहते हैं उन्हीं का सफाया इस संस्कार के द्वारा किया जाता है।

विद्यारंभ - विद्यारंभ का अर्थ शिशु को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से परिचित कराना है। गुरुकुल परम्परा में शिशुको आचार्यों के आश्रम भेजने से पूर्व घर में ही अच्छे मुहूर्त में अक्षर ज्ञान कराया जाता था। प्राचीन काल से परिवार में पहले ही उसे मौखिक रूप से कुछ श्लोकों तथा वेदों आदि के बारे में बता दिया जाता है। इस संस्कार को जन्म के 5 वें या 7 वें वर्ष में सामान्यतः किया जाता है। यह संस्कार वसन्त पंचमी को सरस्वती पूजन के दिन करना अच्छा माना जाता है।

कर्णवेध - सनातन धर्म के सभी संस्कारों का वैज्ञानिक आधार तो सिद्ध है। बालक की व्याधि से रक्षा इस संस्कार का उद्देश्य है। कान में एक ऐसी नस होती है जिसका सम्बंध सीधे दिमाग तक जाता है। कर्णछेदन से उपरोह नस में रक्त संचार नियंत्रित हो जाता है। इस कारण सोचने के शक्ति बढ़ती है तथा हकलाने की समस्या भी कम होती है दिमाग स्थिर तथा शांत भी रहता है। पुरुषों में कर्णछेदन से हर्निया की बीमारी पर भी रोक लगती है। कर्णछेदन शुभ मुहूर्त में बहुत ही विधि विधान से पुरोहितों के द्वारा किया जाता है।

यज्ञोपवीत - यज्ञोपवीत उपनयन संस्कार बौद्धिक विकास से जुड़ा माना जाता है। इस संस्कार का आधार धार्मिक और आध्यात्मिकता की उन्नति है। ऋषियों ने इस संस्कार को बहुत मान्यता दी है। जनेऊ धारण करना सनातन धर्म में बहुत ही पवित्र माना गया है। धर्मशास्त्रों में उल्लेखित इस संस्कार का वैज्ञानिक महत्व भी है। गुरुकुल परम्परा में प्रायः आठ वर्ष की उम्र में इस संस्कार को सम्पन्न किया जाता था तत्पश्चात बालक को अध्ययन के लिये गुरुकुल भेजा जाता था। ब्रह्मचर्य की दीक्षा भी यज्ञोपवीत के समय ही दिया जाता था। धर्मशास्त्रों के अनुसार संस्कार का उद्देश्य संयमित जीवन के साथ आत्मिक विकास के प्रति बालक को प्रेरित करना था।

वेदारंभ - वेद का अर्थ है ज्ञान और इस संस्कार का तात्पर्य है कि बालक ज्ञान को अपने अंदर समाहित करने लायक हो गया है। आचार्य, बालक को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने के लिए तैयार होते हैं। प्राचीन काल में इस संस्कार का बहुत ही ज्यादा महत्व था क्योंकि बालक को अपने परिवार से अलग गुरुकुल में रहकर ज्ञान अर्जित करना पड़ता था और ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में भी कई कठिन व्रतों का पालन करना आवश्यक होता था। वेदाध्ययन तथा विशिष्ट ज्ञान प्रदान करने से पूर्व आचार्य अपने शिष्यों से संयमित आचरण की शिक्षा के साथ उनसे शपथ भी लेते थे। केवल शपथ ही नही प्रत्येक शिष्यों को कठिन परीक्षा से भी गुजरना पड़ता था तथा उत्तीर्ण होने के पश्चात ही उन के जीवन में ज्ञान का प्रकाश आलोकित होना प्रारम्भ होता था। असंयमित जीवन जीने वाले बालकों को वेद अध्ययन का अधिकार प्राप्त नहीं होता था। इसका वैज्ञानिक आधार था की बालक का मस्तिष्क परिपक्व होने के बाद तथा समाजिक रीति रिवाजों को अच्छी तरह समझने लायक होने के बाद ही मस्तिष्क पर वेद ज्ञान का भार डालना। बालक का मस्तिष्क, जो अभी भी विकास के आयाम के अंदर ही विचरण करता होता है उस पर कम से कम बोझ डालना इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य होता था। अभी का आधुनिक विज्ञान भी यही कहता है कि मस्तिष्क के पूर्ण विकास के बाद ही बोझ डालना चाहिए। बालक सातवें वर्ष में इस संस्कार को करने का विधान प्रचलित रहा है।

केशांत - गुरुकुल परम्परा में वेदाध्ययन पूर्ण करने के पश्चात आचार्यों के समक्ष यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था। वस्तुतः यह संस्कार गुरुकुल से विदाई के उपलक्ष्य मे किया जाता था। विधि अनुसार बालक विद्या पूर्ण करने के पश्चात वयस्क हो कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने लायक होता है। वेद–पुराणों एवं विभिन्न विषयों में पारंगत होने के बाद ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार के पूर्व बालों की सफाई की जाती थी तथा उसे स्नान कराकर स्नातक की उपाधि प्रदान की जाती थी।

समावर्तन - इस संस्कार से पूर्व विद्यार्थी का केशांत संस्कार होता था तदोपरांत स्नान कराया जाता था। यह स्नान समावर्तन संस्कार का ही अंग होता है। इसमें सुगन्धित पदार्थो एवं औषधि युक्त जल से भरे आठ घड़ों से वेदी के उत्तर भाग में खड़े होकर स्नान कराने का विधान है। स्नान मंत्रोचारण के साथ होता था। इसके बाद ब्रह्मचारी विद्यार्थी मेखला व दण्ड को छोड़ देता है जो उसे यज्ञोपवीत के समय धारण कराया जाता था। विद्यार्थी सुन्दर वस्त्र व आभूषण धारण करता है तथा आचार्यों एवं गुरुजनों से आशीर्वाद ग्रहण कर अपने घर के लिये प्रस्थान करता है।

विवाह - युवक के शारीरिक एवं मानसिक रूप से परिपक्व हो कर परिवार सम्भालने लायक हो जाने पर युवक–युवतियों का विवाह संस्कार करने का विधान है। भारतीय संस्कृति में विवाह शारीरिक या सामाजिक अनुबन्ध नहीं है। सनातन धर्म में दाम्पत्य जीवन को आध्यात्मिक साधना समझा जाता है। युवक एवं युवतियाँ परिणय सूत्र में बंध कर परिवार को आगे ले जाने के प्रयोजन में शास्त्रानुसार अग्रसरित होते हैं। शास्त्रों में आठ प्रकार के विवाह पद्धति का उल्लेख है– ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्या, आसुर, गन्धर्व, राक्षस एवं पैशाच। प्राचीन काल में सभी प्रथाएँ प्रचलित थी पर जैसे जैसे समय बदला इनका स्वरूप भी बदलता गया। वैदिक काल से पूर्व असंगठित समाज में मुक्त सम्बंध रहे होंगे उन्हें ही एक व्यवस्था में लाने के लिए विवाह संस्कार की स्थापना करके समाज को संगठित एवं नियमबद्ध करने का प्रयास किया गया है। उन्हीं प्रयासों से समाज सभ्य और सुसंस्कृत हैं।

अंत्येष्टि - किसी की मृत्यु हो जाने पर उसके शव को मत्रोंचार के साथ अग्नि को भेंट करने की प्रक्रिया को अन्त्येष्टि संस्कार कहा जाता है। अन्त्येष्टि को अंतिम अथवा अग्नि परिग्रह संस्कार भी कहते हैं। धर्मशास्त्रों की मान्यता है कि मृत शरीर की विधिवत क्रिया क्रम करने से मनुष्य मृत्यु पूर्व की अतृप्त इच्छाएँ शान्त हो जाती हैं। शास्त्रों में बहुत ही सहज ढंग से इहलोक और परलोक की परिकल्पना की गयी है। जब तक जीव शरीर धारण कर इहलोक में

निवास करता है तो वह विभिन्न कर्मों से बंधा रहता है। प्राण वायु निकलने पर वह इहलोक को छोड़ परलोक की तरफ प्रस्थान करता है। उसके बाद की परिकल्पना में विभिन्न लोकों के अलावा मोक्ष या निर्वाण है। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करता है। इसी परिकल्पना के अनुसार ही शव/मृत देह की विधिवत क्रिया होती है। नियमानुसार आधे से ज्यादा शरीर जल जाने के बाद ही परिजन श्मशान घाट से प्रस्थान करते हैं। वैज्ञानिक धारणा के अनुसार अग्नि में समर्पित होने के बाद किसी भी प्रकार के जीवाणुका बाहर रहना और उस से परिवार के सदस्यों का प्रभावित होना नगण्य हो जाता है परन्तु अग्नि देने वाले सदस्य को बिल्कुल अलग कम से कम बारह या तेरह दिन रहना होता है जिसे सूतक का नाम दिया गया है। इसका मुख्य कारण है कि अग्नि देने वाला व्यक्ति मृत देह के सबसे करीब होता है और अगर वो किसी प्रकार से जीवाणु के सम्पर्क में आ गया हो तो भी उसका संक्रमण परिवार के किसी सदस्य पर नहीं हो पाए।

इन परम्पराओं को गहराई से देखने और वैज्ञानिक दृष्टि से परखनें पर ज्ञात होता है कि ऋषि, मुनियों और पूर्वजों ने वर्षों तक अध्ययन करके मनुष्य के लाभ के लिए इन रीति रिवाजों और संस्कारों को शुरू किया था। ये हमें स्वास्थ्य सम्बन्धी बहुत सी बीमारियों और समस्याओं से बचाती हैं। वैज्ञानिकों ने भी अपने शोधों में निश्चित कर दिया है कि ऋषि मुनियों तथा पूर्वजों द्वारा चलाई गई ये परम्परायें तथा संस्कार मानव जीवन के लिए बहुत आवश्यक और जरूरी भी हैं। सनातन धर्म से जुड़े सभी संस्कार रीति–रिवाज आकर्षक तो हैं परन्तु कठोर आचरण तथा सिद्धांतों के हैं इसके बावजूद भी विश्व इनकी तरफ आकर्षित हो रहा है जिसका मुख्य कारण इनके पीछे छुपे वैज्ञानिक तथ्य हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है जिनके लिखित ज्ञान रीति–रिवाज, संस्कार, आस्थाओं से जुड़ी हुई हैं जिनका पालन कर के मानव अपना कल्याण कर सकता है तथा भविष्य के लिए धरोहरों को सुरक्षित, संरक्षित रख सकता है। ■

मीडिया जगत की महान प्रतिभा सलमा सुल्तान

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी विभाग)
किसान पोस्ट ग्रेजुएट कॉलज सिम्भावली, हापुड़

"महिला प्रतिभा को हर कोई, कर रहा अब स्वीकार।
दे रहा उसको मान-सम्मान-प्रतिष्ठा, जिसकी है वो हकदार।।"

जब भी बात महिला या महिला प्रतिभाओं की होती है तो लिखने व बोलने के लिए शब्द कम पड़ जाते है। क्योंकि महिला होना ही अपने आप में महान होता हैं। महिला गुणों की खान है इसमें भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है। जीवन के प्रेत्यक क्षेत्र में चाहे वो शिक्षा जैसा परंपरागत क्षेत्र हो या रक्षा कौशल जैसा आधुनिक क्षेत्र हो, महिला प्रतिभाएं निखरकर व उभरकर सामने आ रहीं हैं। महिलाएं तथा राजीनीति के क्षेत्र में, खेल जगत में, विज्ञान के क्षेत्र में होने के साथ–साथ सभी क्षेत्रों में नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं और अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। एक ऐसा ही जाना माना क्षेत्र है मीडिया का क्षेत्र, जहाँ पहले केवल कुछ महिला समाचार उद्घोषिका के नाम जैसे सलमा सुल्तान, गीतांजलि अय्यर, अविनाश कौर सरीन और सरला माहेश्वरी आदि लिए जा सकते थे लेकिन अब टी वी चैनल्स पर न्यूज एंकरों की भरमार है। समय बदल रहा हैं, बदलते वक्त के साथ महिलाओं की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ है। इस बदलते हुए परिदृश्य में जहाँ सम्पूर्ण समाज और विश्व बदल रहा रहा है ऐसे में समाज को नयी दिशा व दशा देने में महिला मीडिया कर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका हो जाती है। जब मीडिया में शुचिता, पारदर्शिता, शालीनता व सकारात्मकता की बात करते हैं तो मस्तिष्क में एक ही नाम आता है साठ के दशक की खनकती आवाज सलमा सुल्तान का, जिनका खास तरीके से साड़ी पहनना व बालों में गुलाब का फूल लगाने का अंदाज सभी के मन को मोहित करता था। इन्होंने 1967 से 1997 तक दूरदर्शन के साथ समाचार–वाचक के रूप में काम किया। वे स्क्रीन पर दिखने वाली सबसे अधिक लोकप्रिय समाचार–वाचक थीं। धीर, गंभीर आवाज और हाव–भाव की स्वामिनी सलमा जी के फिल्मी सितारों की तरह लाखों फैन्स थे। उन्हें उस समय दूरदर्शन की सर्वश्रेष्ठ समाचार–वाचक होने का खिताब भी मिला था।

'नमस्कार, आज के समाचार इस प्रकार है' जैसे सिग्नेचर स्टाइल से घर घर में, बच्चो से लेकर बुजर्गो तक के मन में बसने वाली, करोड़ों दिलों को अपनी आवाज का दीवाना बनाने वाली सलमा जी ने भारतीय वेशभूषा साड़ी को एक नया आयाम प्रदान किया तथा भारतीय सभ्यता व संस्कृति को बढावा देने का काम किया। जिस सरलता, सौम्यता व शालीनता से वो समाचार पढ़ती थी उसका मीडिया जगत में कोई अन्य दूसरा उदाहरण नही है। जिस प्रकार आज टी वी धारावाहिक व फिल्में देखने के लिए उत्साहित होते है वैसे ही साठ के दशक में लोग टेलीविजन

के पर्दे पर उनके आने का इंतजार करते थे।

16 मार्च 1947 को भोपाल में जन्मी सलमा सुल्तान ने टी वी पत्रकार की हैसियत से दूरदर्शन में काम करना शुरू किया। दूरदर्शन से अवकाश प्राप्ति होने के बाद सलमा जी ने लेन्सव्यू प्राइवेट लिमिटेड के नाम से अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस शुरू कर दिया और कई सामाजिक विषयों पर धारावाहिक बनाये। इनके प्रमुख धारावाहिक थे पंचतंत्र से, स्वर मेरे तुम्हारे, सुनो कहानी और जलते सवाल। ये धारावाहिक दर्शकों द्वारा काफी पसंद किए गए थे।

सलमा सुल्तान जी के पिताजी मोहम्मद असगर अंसारी कृषि मंत्रालय में सचिव थे। सलमा की बड़ी बहन मैमूना सुल्तान भोपाल से चार बार कांग्रेस सांसद रह चुकी हैं। सलमा जी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा मध्य प्रदेश के सुल्तानपुर से की और भोपाल से स्नातक किया। उन्होंने अपनी परास्नातक की पढ़ाई अंग्रेजी विषय में इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली से की। सलमा सुलतान के पति आमिर किदवई थे, उनका बेटा साद किदवई आयकर आयुक्त व बेटी सना किदवई जानी–मानी कोरियोग्राफर है।

सलमा सुलतान ने 23 वर्ष की आयु में दूरदर्शन में एंकर के लिए ऑडिशन दिया और उन्हें पहले ही प्रयास में चुन लिया गया। आज मीडिया जगत की एंकरों को सलमा जी से प्रेरणा लेनी चाहिए क्योंकि बदलते वक्त के साथ–साथ मीडिया भी बहुत बदल गया है। नये दौर में न्यूज एंकर टी वी पर बहुत शोर शराबा करते हैं। मुद्दे पर बात करने के बजाय डिबेट के नाम पर चार पांच लोगों को इकट्ठा कर तेज आवाज में बात करना अपनी शान समझते हैं। यही कारण है कि इस बदलते परिवेश में मीडिया की भूमिका पर सवाल उठाए जा रहे हैं, पहले एंकर के प्रति जो श्रद्धा व सम्मान की भावना रहती थी वह अब धीरे–धीरे कम हो गयी है। आजकल मीडिया में शुचिता का अभाव, पारदर्शिता का अभाव व सकारात्मकता की कमी देखने में आ रही है। ऐसे में सलमा सुल्तान जी की 1984 की वो घटना याद आती है, जब दूरदर्शन पर 31 अक्तूबर 1984 को उनको पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या की खबर पढ़नी थी तो उन्होने अपने बालों में फूल नहीं लगाया था। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या की खबर ने देश को हिला दिया था। एक साक्षात्कार में सलमा सुलतान जी ने बताया था कि, 'मुझे नहीं समझ आ रहा था कि वो न्यूज मैं कैसे पढ़ूंगी। इस खबर के बाद मेरे आंसू नहीं रूक रहे थे, लेकिन उसी हालात में मुझे कैमरे का सामना करना पड़ा।' एक वीडियो में उन्होंने कहा है कि 'इंदिरा गांधी की हत्या की खबर देश को देना मैं हमेशा याद रखूंगी। उस खबर को पढ़ने से पहले मैं कांप रही थी। इतनी बड़ी शख्सियत की मृत्यु का समाचार पढ़ना मेरे लिए आसान नहीं था। उन हालातों में जब उनके आंसू रुक नहीं रहे थे, वो काफी बेबस हो गई थी तब ऐसी स्थिति में भी सलमा सुलतान जी ने इंदिरा जी की हत्या के उस हृदयविदारक समाचार को बेहद संयमित होकर टीवी पर पढ़ा था।

ऐसी भावनाओं का भाव अब कहां देखने को मिलता है। अभी के एंकरों को तो केवल अपने न्यूज चैनल की टीआरपी बढ़ाने से मतलब होता है। अब के दौर में किसी भी बात को ज्यादा मसालेदार बनाकर सबके सामने परोसना एंकर की जरुरत बन गया है। ऐसे समय में मीडिया जगत में जरूरत दिखाई देती है सलमा सुल्तान जी जैसी शख्शियत की, जो समाज को नई दिशा और दशा दे सकें। जरूरत है समाज और मीडिया को चिंतन की जिससे कि समाज में सकारात्मक विमर्श स्थापित हो सके। समाज की विसंगतियों को खत्म करने में मीडिया जगत मुख्य भूमिका निभाता है ऐसे में प्रभावशाली मीडिया की नितांत आवश्यकता है। जब भी सलमा सुलतान जी जैसी प्रतिभाशाली उद्घोषिका को याद करते हैं तो उनका वही मासूम सा चेहरा, साड़ी पहनने का स्टाइल, बोलने की शालीनता, बालों में गुलाब लगाना भारतीय सभ्यता और संस्कृति के दर्शन कराता है। जब भी मष्तिष्क में सलमा सुलतान कि छवि उभरती है तो उसमें गरिमामयी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते हैं जिन्होंने मीडिया की मर्यादा को संयमित रखा। मीडिया जगत को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। सलमा जी न केवल मीडिया जगत के लिए बल्कि सम्पूर्ण महिला जगत की आदर्श हैं और अंत में चार पंक्तियों के माध्यम से उनको श्रद्धापूर्वक नमन करना चाहूँगी कि –

'आप सौम्यता, शालीनता, शुचिता की प्रतीक है।
मीडिया जगत का प्रभावशाली अतीत है ।।
भारतीय संस्कृति की संवाहक ।
महिला शक्ति की मर्यादित तस्वीर है।। ■

वैश्विक परिदृश्य

चतुष्कोण सुरक्षा संवाद
(Quadrilateral Security Dialogue)

डॉ. अखिलेश मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष (अर्थशास्त्र)
एस. डी. पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद

चतुष्कोण सुरक्षा संवाद Quadrilateral Security Dialogue अर्थात क्वैड) विश्व के चार प्रमुख देशों भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के मध्य एक बहुपक्षीय समझौते का मंच है। इस मंच का उद्देश्य इंडो–पैसिफिक स्तर पर ऐसा मंच तैयार करना है जिससे समुद्री रास्तों से व्यापार आसान हो सके एवं आपदा के समय बचाव हेतु संयुक्त रणनीति पर कार्य किया जा सके। वास्तव में क्वैड का विचार, आज से डेढ़ दशक पूर्व वर्ष अर्थात 26 दिसंबर 2004 को हिंद महासागर में आयी सुनामी जिसने लगभग 2,30,000 लोगों की मौत हो गयी थी एवं करोड़ों लोगों को बेघर कर दिया था, के बाद आया। किन्तु वास्तविक रूप में इसकी आवश्यकता तब अधिक महसूस हुई जब चीन ने एशिया–प्रशांत महासागर में न केवल अपना वर्चस्व बढ़ाना शुरू किया बल्कि, पड़ोसी देशों को धमकाने एवं दक्षिण चीन सागर में अवैध रूप से अपना सैन्य बेस बढ़ाना शुरू किया। 2012 में जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री शिंजो अबे ने इससे प्रभावी रूप से निबटने के लिए ऐसे संगठन का प्रस्ताव रखा था (डेमोक्रेटिक सिक्योरिटी डायमंड) जिसमें इस सामुद्रिक क्षेत्र में आने वाले ताकतवर देश शामिल हो सकें। हालाँकि, इस प्रस्ताव को धरातल पर नही उतारा जा सका। अमेरिका, चीन की बढती आर्थिक एवं सामरिक शक्ति के प्रति अपनी चिंता तो दर्शाता रहा किन्तु, अपने व्यक्तिगत स्वार्थों विशेष तौर पर चीन में अपने भारी निवेश के कारण कोई ठोस पहल करने को तैयार नही था वहीं आस्ट्रेलिया का रवैया "कभी हाँ कभी ना" का बना रहा। चीन के सामने आर्थिक एवं सामरिक रूप से सम्पन्न देश भी प्रत्युत्तर के लिए कभी हिम्मत नही जुटा पा रहे थे एवं चीन की मनमानियों को बर्दास्त करने को अभिशप्त थे। नवंबर 2017 में हिंद–प्रशांत क्षेत्र को किसी बाहरी शक्ति (विशेषकर चीन) के प्रभाव से मुक्त रखने हेतु नई रणनीति बनाने के लिये 'क्वाड' समूह की स्थापना की गयी और आसियान शिखर सम्मेलन के एक दिन पहले इसकी पहली बैठक का आयोजन किया गया।

दक्षिणी चीन सागर में अपने वर्चस्व के बाद चीन भारत के पडोसी देशों के माध्यम से भारत को घेरने के अपने कुत्सित प्रयास को जारी रखा। भारत ने यूपीए शासनकाल के दौरान, चीन के अतिक्रमण के प्रति, उदासीनता एवं तटस्थता की नीति का पालन किया। चीन की विस्तारवादी नीति जारी रही एवं वह भारत के संयम को हमेशा उसकी कमजोरी समझता रहा। चीन को पहली बार भारत की शक्ति का अनुभव तब हुआ जब भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी ने "डोकलाम" पर न केवल मजबूत सैन्य एवं रणनीतिक प्रत्युत्तर दिया बल्कि, ताइवान, हांगकांग पर लंबे समय से चली आ रही भारत की तटस्थता की नीति को बदला। दक्षिण चीन सागर में भी चीन के विस्तारवादी नीतियों से प्रताड़ित देशों को भारत नें अपना नैतिक समर्थन देना शुरू किया जिससे इन राष्ट्रों के मध्य भी एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। कोरोना के दौर में, वैश्विक परिस्थितियाँ, आर्थिक एवं रणनीति क्रम में काफी तेजी से बदलाव हो रहा है। कोरोना के कारण विश्व में स्वास्थ्य एवं आर्थिक संकट दोनों गहरा रहे हैं। तमाम अर्थव्यवस्थाएं बर्बादी की कगार तक पहुंच गयी है एवं विश्व में लगभग 10 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे धकेल दिए गये हैं। ऐसे में भारत द्वारा देश में कोरोना संकट से निबटने की रणनीति एवं साथ ही दुनिया को दवा एवं प्रभावी टीका की आपूर्ति एवं प्रबंधन का जिस तरह से प्रदर्शन किया गया, उससे भारत की वैश्विक कल्याण एवं मानवता के प्रति निःस्वार्थ समर्पण की सदियों पुरानी प्रतिबद्धता प्रमाणित हुयी। इस दौरान, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की साख दुनिया भर में तेजी से बढ़ी वहीं चीन के प्रति दुनिया में गुस्सा तेजी से बढ़ रहा है। भारत द्वारा बहुत कम समय में स्वदेशी, सस्ती एवं प्रभावी वैक्सीन को तैयार करना, विशाल एवं विविध प्रदेशों में समग्र टीकाकरण का एक साथ अभियान प्रारम्भ करना जैसे कदम से दुनिया में भारतीय प्रबन्धन का डंका बज रहा है। यही कारण है कि दुनिया अब भारत को संकट मोचक के रूप में देख रही है। कोरोना से प्रताड़ित विश्व को महसूस हो रहा है कि दक्षिण चीन सागर से लेकर हिन्द महासागर तक चीन की आर्थिक एवं सामरिक घेराबंदी यदि करना है तो बिना भारत के सहयोग के संभव नही है।

लगभग एक दशक के विचार मंथन एवं भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी के सक्रिय पहल के बाद चतुष्कोण सुरक्षा संवाद न केवल एक प्रभावी मंच के रूप में मूर्त स्वरूप ले सका बल्कि इसकी पहली मीटिंग वर्ष 2019 में हुई। वर्ष 2020 में कोरोना के कारण नेताओं की मुलाकात हालाँकि बाधित

हुई किन्तु, राष्ट्राध्यक्षों के मध्य द्विपक्षीय वार्ता जारी रही। 12 मार्च 2021 को अंततः चारों राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों (भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमन्त्री श्री स्कॉट मॉरिसन, जापान के प्रधानमन्त्री श्री योशिहिदे सुगा और अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जो बाइडन) के बीच वर्चुअल स्तर पर शिखर सम्मेलन हुआ एवं भविष्य की रणनीति का खाका भी दुनिया के समक्ष रखा गया।

'क्वाड' के प्रति चीन का दृष्टिकोण हमेशा नकारात्मक रहा है। चीन के उप विदेश मंत्री, श्री लुओ झाओहुई, क्वाड को 'चीन विरोधी फ्रंटलाइन' या "मिनी–नाटो" के रूप में बताया है। वहीं भारत सहित क्वाड़ देशों का कहना है कि क्वाड कोई सैन्य गठबंधन नहीं है बल्कि, हिंद महासागर से लेकर पश्चिमी प्रशांत महासागर तक समुद्र की सुरक्षा, समुद्रीय एवं अन्य आपदा से निबटने के लिए एक सहयोग मंच है। अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जो बाइडन की प्रेस सेक्रेटरी जेन सॉकी के अनुसार इस मीटिंग में कई मसलों में बात होने वाली है जिसमें कोरोना वायरस, इकॉनोमिक कारपोरेशन, जलवायु संकट आदि प्रमुख हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी क्वाड सम्मेलन में अपना संबोधन देते हुए कहा कि हम अपने लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वतंत्र खुले और समावेशी भारत–प्रशांत के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से एकजुट हैं। आज का हमारा एजेंडा– वैक्सीन, जलवायु परिवर्तन और उभरती प्रौद्योगिकियों जैसे क्षेत्रों को कवर करना है"। उन्होंने आगे कहा कि "मैं इस सकारात्मक दृष्टि को भारत के वसुधैव कुटुम्बकम के प्राचीन दर्शन के विस्तार के रूप में देखता हूं, जो दुनिया को एक परिवार मानता है। हम अपने साझा मूल्यों को आगे बढ़ाने और एक सुरक्षित, स्थिर और समृद्ध इंडो–पैसिफिक को बढ़ावा देने के लिए पहले से कहीं अधिक साथ मिलकर काम करेंगे। इस बैठक में कोरोना से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों पर विचार किया गया। वार्ता निष्कर्ष के मुताबिक, भारत में कोरोना वैक्सीन का निर्माण होगा जिसके लिए अमेरिका और जापान फंड देंगे जबकि, आस्ट्रेलिया वैक्सीन को दक्षिण पूर्व एशियाई देशो में पहुचाने एवं अन्य लोगिस्टिक में सहयोग प्रदान करेगा। क्वाड एवं भारत के लिए अवसर एवं चुनौतियाँ विषय पर चर्चा अगले अंक में– क्रमशः ■

महानगर की चकाचौंध में विलुप्त होता पर्यावरण

डॉ महिमा सिंह राठौर
असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ राजेंद्र प्रसाद डिग्री कॉलेज, लखनऊ

मोटे तौर पर बात करें तो पर्यावरण समग्रता का नाम है जिसमें हवा ,मिट्टी, जल ,पशु–पक्षी पेड़– पौधें और इस सृष्टि का कण–कण समाहित है। मानव स्वयं भी पर्यावरण का अंग है।

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था दो चीजें सीमित है एक ब्रह्मांड और दूसरा मानव की मूर्खता। मानव ने अपनी मूर्खता के कारण अनेक समस्याएं पैदा की है। जिसमें पर्यावरण प्रदूषण अहम हैं।

आधुनिकता की चकाचौंध में फंसा मनुष्य अपनी सुख–सुविधा व समृद्धि के अंधाधुंध बढ़ोत्तरी करने की लालसा से वशीभूत होकर प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर रहा है। परिणामस्वरूप हवा, पानी और मिट्टी अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है परिस्थिति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्रदूषण का नतीजा यह है कि लाइलाज गंभीर बीमारियां फैल रही हैं वातावरण में घातक गैसों के उत्सर्जन की मात्रा बढ़ रही है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न होती जा रही है यह अन्य जीवों के साथ मानव के अस्तित्व के लिए भी खतरा उत्पन्न कर रही है।

बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में नगरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर बिना सोचे समझे अंधाधुध काटे जा रहे वनों के कारण भूमि अपरदन , भूस्खलन तथा बाढ़ जैसी समस्याओं का प्रकोप बढ़ रहा है।

तालाबों की सार्वजनिक उपयोग की भूमि पर अतिक्रमण करने वालों का वहां कालोनी बसाने का सिलसिला जारी है। जलस्रोतों को अपशिष्ट पदार्थों का गोदाम बनाया जा रहा है। जमीन उजाड़ दी उन्हें बंजर बना दिया, पर्वतों के सीने चीर कर लालची लोगों ने अपने लिए ऐशगाहो का निर्माण करने के लिए जंगल उजाड़ दिए, जलस्रोतों को लूट लिया और उन्हें सुखा दिया, पेड़ों को काट कर वहां कंक्रीट की गगन चुंबी इमारतें खड़ी कर दी। ड्राइंग रूम हो चाहे बेडरूम हो उनकी शोभा बढ़ाने के लिए प्लास्टिक के पौधों का इस्तेमाल कर प्रकृति प्रेमी होने का ढोंग रच रहे हैं।

आर्थिक विकास के नाम पर नदियों, जंगलों और पहाड़ों का नाश किया। यह नीतियां मौत की तरफ ले जा रही हैं। जलवायु परिवर्तन, तूफान, बाढ़, भूकंप, अकाल, जलसंकट, बीमारियों आदि दुष्परिणाम के रूप में सामने आ रहे हैं। महानगर में कंफर्ट जोन में रहने वाले लोग वैसे तो पर्यावरण का हमेशा रोना रोते हैं परन्तु सुविधा के लिए घर में जितने लोग हैं सबके लिए अलग–अलग वाहन। पार्क में सुबह मॉर्निंगवॉक के लिए उस स्थल तक पहुंचने के लिए भी वाहन का इस्तेमाल उनके आदत में शामिल हो रहा है। छोटे–छोटे कार्यो के लिए भी निजी वाहन का उपयोग कर पेट्रोल, डीजल की पृथ्वी पर उपस्थित ईंधन के लिए सीमित

स्रोतों को नष्ट किए जा रहे हैं। इन क्रिया कलापों के कारण ही वायुमंडल में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन पार्टिक्यूलेट, तथा ओजोन प्रदूषण का मिश्रण इतना बढ़ गया है कि इन तत्वों की मौजूदगी के कारण सांस की बीमारियाँ बढ़ने लगी है। पेट्रोल डीजल से पैदा होने वाले घुएं से वातावरण में कार्बनडाई ऑक्साइड व ग्रीन गैसों की मात्रा बेहद खतरनाक स्तर पर पहुंच गयी है।

देश की राजधानी, महानगर एवं उत्तर प्रदेश के कई प्रमुख नगरों में जहरीली हवा में सांस लेना दूभर हो गया है। पर्यावरणविदों का कहना है कि इसमें संतुलन को बनाए रखने की जरूरत है। महानगरों में पर्यावरण संरक्षण का एक मात्र विकल्प इकोफ्रेंडली, जीवनशैली को अपनाकर ही पर्यावरण के संकट से उबरा जा सकता है। महानगर की जीवनशैली को पॉलिथीन ने पूरी तरह से जकड़ लिया है। तथा अधिक उपयोग होने के कारण इससे भी पर्यावरण संकट बढ़ रहा है। पॉलिथिन मानव के लिए घातक है। पॉलिथीन का मूल घटक पेट्रोलियम उत्पाद है पॉलिथिन की निर्माण प्रक्रिया के कार्बनिक व अकार्बनिक रसायन मिलाए जाते हैं इनमें थेलेटस, कोबाल्ट, क्रोमियम, लेड, सहित विविध प्रकार के दर्जनों विषैले रसायन सम्मिलित हैं। पॉलिथीन जैविक रूप से विघटित नहीं होती है लेकिन सूर्य की किरणों से पॉलिथीन में उपस्थित विषैले रसायन पिघलकर मिट्टी व पानी में चले जाते हैं जो भूमि, जल, पौधे, अनाज व फलों को विषैला करता है। पॉलिथिन अत्यंत ही बारीक कण में टूट जाते हैं जिन्हें माइक्रो प्लास्टिक कहते हैं माइक्रो प्लास्टिक के कण मिट्टी की उपज संरचना को बाधित करते हैं। मृदा की मूल प्रकृति को तहस–नहस करते हैं। यह विषैले तत्व कण पौधों की जड़ों द्वारा अवशोषित कर लिए जाते हैं यही कारण है कि अनाज से लेकर फलों सब्जियों में पॉलिथीन रसायन अधिक पाए जाते हैं। खुले में विसर्जित होने पर इन्हें पशु खा लेते हैं और पशु बीमार हो जाते हैं। जलीय जीवो में भी जा रहा जहर जल स्रोतों कुआं, नलकूप, पोखर, तालाब नदियों में विषैले रसायन पानी को प्रदूषित करते हैं। इससे मछलियां व अन्य जलीय जीव वनस्पति में पॉलिथीन की रसायन मात्रा खतरनाक स्तर तक होती जा रही है।

विषैले रसायन मानव शरीर की प्राकृतिक हार्मोन व्यवस्था पर दुष्प्रभाव डालते हैं। यह जलीय परिवर्तन संकट को बढ़ाता है। खुले में विसर्जित हुए पॉलिथीन अन्य कचरे के साथ जलता है तो इससे कई विषैली गैस बनती है। ये विषैली गैस वनस्पति एवं पेड़ पौधों को भी गंभीर हानि पहुंचाती है। पॉलिथीन खुली नालियों, सीवर में जमा होकर प्रवाह को भी बाधित करती हैं। जमा गंदगी से मच्छरों की समस्या बढ़ने के कारण बीमारियां बढ़ती है और इससे विभिन्न प्रकार की पारिवारिक सामाजिक व आर्थिक समस्या पैदा हो रही हैं। मानव समाज, वनस्पति जगत, जीव जगत सहित संपूर्ण प्रकृति के पर्यावरण संरक्षण के लिए एक मात्र विकल्प इकोफ्रेंडली जीवनशैली को अपनाकर ही पर्यावरण संकट से उबरा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा छोटे–छोटे प्रयास से हरित घर का निर्माण कर पर्यावरण संरक्षण कर सकता है। मानव समाज, वनस्पति जगत, जीव जगत, सहित संपूर्ण प्रकृति के लिए हमें अपने घर के कचरे से पॉलिथीन को अलग कर एक बोतल में बंद कर इकोब्रिक्स बनाएं जा सकते हैं। इकोब्रिक्स सरल व प्रभावी समाधान है इकोब्रिक्स का उपयोग करके दीवार, फुटपाथ, गमले, कचरापात्र, फर्नीचर से लेकर सड़क निर्माण में किया जा सकता है। इकोब्रिक्स से बनी सड़कें ज्यादा मजबूत होती है। ■

भारतीय शिक्षा शास्त्री

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक एवं चिन्तक

शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है और श्रृंगार भी करती है। शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार को, आचरण को, क्रिया–कलापों को उचित और समाजोपयोगी बनाती है, व्यक्ति में रचनात्मक और सृजनात्मक शक्ति का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण से अनुकूलन करने में ही समर्थ नहीं होता वरन वातावरण और प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य शिक्षाशास्त्री ही करते हैं। प्राचीन काल से लेकर आज तक देश, काल, समय और परिस्थिति के अनुसार इन्हीं शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा में परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। अपने शैक्षिक विचारों के द्वारा इन्होंने शिक्षा के स्वरूप को निश्चित आधार प्रदान किया है।

दर्शन, जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है तथा विचार अथवा विश्लेषण करके सिद्धान्तों का निर्माण भी करता है। शिक्षा इन सिद्धांतों को व्यवहार अथवा प्रयोग में लाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा सैद्धान्तिकता को व्यावहारिकता में बदलती है। चूँकि शिक्षा का कार्य व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाना है, इसलिए एडम्स ने कहा है कि, "शिक्षा दर्शन का गत्यात्मक साधन है।" इतिहास इस बात का साक्षी है कि महान दार्शनिक ही महान शिक्षाशास्त्री भी हुए हैं, इनके द्वारा लिखे हुए ग्रन्थ केवल दर्शनशास्त्र की ही महान कृतियाँ नहीं रही अपितु इनका शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष महत्त्व है। शिक्षा की प्रक्रिया दर्शन की सहायता के बिना उचित मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकती, अतः सभी दार्शनिकों द्वारा अपने–अपने दर्शन को क्रियात्मक अथवा व्यवहारिक रूप देने के लिए अन्त में शिक्षा का ही सहारा लिया गया है। जे.एस.रास ने ठीक ही लिखा है, "दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं वे एक दूसरे पर अंतर्निहित हैं।" जहां दर्शनशास्त्र शिक्षा

को प्रभावित करता है वहीं शिक्षा दार्शनिक दृष्टिकोण को नियंत्रित करती है। इसीलिए यह देखा गया है कि उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री उच्च कोटि के दर्शनशास्त्री हुए है।

ऐसे ही एक महान दार्शनिक एवं शिक्षा शास्त्री भारत में हुये है जगद्गुरु आदि शंकराचार्य। उन्होंने शिक्षा को शब्दों में "सा विद्या या विमुक्तये" कहकर समझाया कि विद्या वही है जो मुक्ति दे। भारत में जगद्गुरु आदि शंकराचार्य भारतीय दर्शन 'अद्वैत वेदांत' के प्रचारक थे। शंकराचार्य का बचपन का नाम शंकर था। इनका जन्म आठवीं सदी में केरल में पूर्णा नदी के तट पर स्थित कालड़ी ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम शिवगुरु व माता आर्यम्बा थी। शंकर के पिता व दादा वेद–शास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे। ज्योतिषियों ने शंकर के पिता को बताया कि उनका पुत्र महान पण्डित, यशस्वी और भाग्यशाली होगा। तीन वर्ष की उम्र में शंकर के पिता का देहान्त होने पर माँ ने अध्ययन के लिए उन्हें गुरु के पास भेजा। थोड़े ही समय में वेदशास्त्रों और धर्मग्रन्थों में पारंगत होने से इनकी गणना प्रथम कोटि के विद्वान पण्डितों में होने लगी। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने शैशव में ही संकेत दे दिया था कि वे सामान्य बालक नहीं हैं। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य के विषय में कहा जाता है कि,

"अष्टवर्षे चतुर्वेदी, द्वादशे सर्वशास्त्रवित्
षोडशेकृतवान्भाष्यमद्वात्रिंशेमुनिरभ्यगात्।"

अर्थात् आठ वर्ष के हुए तो वेदों के विद्वान, बारहवें वर्ष में सर्वशास्त्र पारंगत और सोलहवें वर्ष में ब्रह्मसूत्र– भाष्य रच दिया। उन्होंने शताधिक ग्रंथों की रचना शिष्यों को पढ़ाते हुए कर दी। लुप्तप्रायः सनातन धर्म की पुनर्स्थापना, तीन बार भारत भ्रमण, शास्त्रार्थ दिग्विजय, भारत के चारों कोनों में चार शंकर मठ की स्थापना, चारों कुंभों की व्यवस्था, वेदांत दर्शन के शुद्धाद्वैत संप्रदाय के शाश्वत जागरण के लिए दशनामी नागा संन्यासी अखाड़ों की स्थापना, पंचदेव पूजा प्रतिपादन आदि उन्हीं की देन है।

आदि गुरु शंकराचार्य का जन्म के सम्बन्ध में भ्रम फैला हुआ है। इतिहासकार मानते हैं कि उनका जन्म 7वीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ था। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि आदि शंकराचार्य जी का काल लगभग 2200 वर्ष पूर्व का है। दयानंद सरस्वती जी 137 साल पहले हुए थे। आज के इतिहासकार कहते हैं कि आदि शंकराचार्य का जन्म 788 ईस्वी में

हुआ और उनकी मृत्यु 820 ईस्वी में। वह 32 साल जीवित रहे। आदि शंकराचार्य के कई शिष्य थे जिनमें पद्मपाद, सुरेश्वरा, तोथाका, सिटसुखा, प्रिथविधारा, सिदविलासयाति, बोधेंद्र, ब्रह्मेंद्र, सदानंद और अन्य शामिल हैं।

इन्होंने ब्रह्मसूत्र और भगवद् गीता पर भाष्य लिखे हैं। उन्होंने इनमें हिन्दू और बौद्ध धर्म के बीच के अंतर को समझाया जिसमें कहा गया कि हिन्दू धर्म बताता है कि 'आत्मान (आत्मा, स्वयं) का अस्तित्व है, जबकि बौद्ध धर्म बताता है कि 'कोई आत्मा, कोई स्व' नहीं है। शंकर ने संपूर्ण भारत का भ्रमण करके प्रवचनों के माध्यम से अपने दर्शन का प्रचार–प्रसार किया। शंकराचार्य ने अपने समय के प्रख्यात विद्वानों – कुमारिल भट्ट, मंडन मिश्र व उनकी पत्नी भारती को शास्त्रार्थ में पराजित कर वेदान्त दर्शन की सर्वोच्चता स्थापित की।

वेदान्त दर्शन का प्रचार–प्रसार और भारतीय संस्कृतिक एकता को प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किये, ये चारों पीठ एक–एक वेद से जुड़े हैं। पूर्व दिशा में ऋग्वेद से गोवर्धन पुरी मठ यानी जगन्नाथपुरी (ओड़िशा), पश्चिम दिशा में सामवेद से शारदा मठ द्वारका (गुजरात) में, उत्तर दिशा में अथर्ववेद से ज्योतिर्मठ बद्रीधाम (उत्तराखंड) में और दक्षिण दिशा में यजुर्वेद से श्रंगेरी मठ जो कि रामेश्वरम् (तमिलनाडु) में स्थापित हैं। गोवर्धन मठ का सम्बन्ध भगवान जगन्नाथ मंदिर से है, बिहार से लेकर राजमुंदरी तक और उड़ीसा से लेकर अरुणाचल तक का भाग इस मठ के अंतर्गत आता है, इस मठ के अंतर्गत दीक्षा लेने वाले सन्यासियों के नाम के बाद 'आरण्य' सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है, जिससे उन्हें उस सम्प्रदाय का सन्यासी माना जाता है, इस मठ का महावाक्य है **'प्रज्ञानं ब्रह्म'** और इस मठ के अंतर्गत ऋग्वेद को रखा गया है। शारदा मठ को द्वारका मठ के नाम से भी जाना जाता है, इसके अंतर्गत दीक्षा लेने वाले सन्यासियों के नाम के बाद 'तीर्थ' और 'आश्रम' सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है तथा इस मठ का महावाक्य है **'तत्वमसि'** और इसके अंतर्गत सामवेद को रखा गया है। ज्योतिर्मठ उत्तराखंड के बद्रिकाश्रम में है, आठवीं सदी में स्थापित ज्योतिर्मठ सदियों से वैदिक शिक्षा और ज्ञान का एक प्रमुख केंद्र रहा है जिसके अंतर्गत दीक्षा लेने वाले सन्यासियों के नाम के बाद 'गिरी' 'पर्वत' और 'सागर' सम्प्रदाय का विशेषण लगाया जाता है व उन्हें उस सम्प्रदाय का सन्यासी माना जाता है, इसका महावाक्य **'अयमात्मा ब्रह्म'** है और इस मठ के अंतर्गत अथर्ववेद को रखा गया है। **श्रृंगेरी शारदा पीठ** भारत के दक्षिण में रामेश्वरम में स्थित है, श्रृंगेरी मठ कर्नाटक के सबसे प्रसिद्ध मठों में से एक है, इसके अतिरिक्त कर्नाटक में रामचन्द्रपुर मठ भी प्रसिद्ध है, इनके अंतर्गत दीक्षा लेने वाले संन्यासियों के नाम के बाद 'सरस्वती', 'भारती', 'पुरी' सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है, जिससे उन्हें उस संप्रदाय का संन्यासी माना जाता है, इस मठ का महावाक्य **'अहं ब्रह्मास्मि'** है तथा इसके अंतर्गत यजुर्वेद को रखा गया है।

शिक्षा की प्रक्रिया दर्शन की सहायता के बिना उचित मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकती, अतः सभी दार्शनिकों द्वारा अपने-अपने दर्शन को क्रियात्मक अथवा व्यवहारिक रूप देने के लिए अन्त में शिक्षा का ही सहारा लिया गया है। जे.एस.रास ने ठीक ही लिखा है, "दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं वे एक दूसरे पर अंतर्निहित हैं।" जहां दर्शनशास्त्र शिक्षा को प्रभावित करता है वहीं शिक्षा दार्शनिक दृष्टिकोण को नियंत्रित करती है। इसीलिए यह देखा गया है कि उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री उच्च कोटि के दर्शनशास्त्री हुए हैं।

आदि शंकराचार्य का ब्रह्मसूत्र पर एक भाष्य है जो कि हिन्दू धर्म का मूल पाठ है, ब्रह्म सूत्र पर आदिशंकराचार्य की टीका अच्छी तरह से प्राप्त होती है। 10 प्रमुख उपनिषदों पर उनकी टीका विद्वानों द्वारा अच्छी मानी जाती है। शंकर की अन्य प्रसिद्ध रचनाओं में भगवद् गीता पर भाष्य शामिल हैं जिसे विद्वानों के बीच स्वीकार्यता है। शंकर के स्तोत्रों को विद्वानों ने अच्छी तरह से माना है जिसमें कृष्ण और शिव पर स्तोत्र शामिल हैं। श्री आदि शंकर, जो अद्वैत के संस्थापक और वेदों और पुराणों के अच्छे जानकार थे, भगवान शिव और पार्वती के प्रति अपनी निष्ठा के लिए जाने जाते थे। वे कोल्लूर मूकाम्बिका के बहुत समर्पित भक्त थे और उनकी प्रशंसा में वहां गाया जाता है। आदि शंकराचार्य जन–मानस की आत्मा में वास करते हैं और सबका मार्गदर्शन करते हैं। ऐसा माना जाता है कि वे इस कलियुग में भी अपने भक्तों की सभी प्रकार की समस्याओं से रक्षा करते हैं। उन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है, जो कि लोगों के कल्याण के लिए प्रकट हुए थे।

जगदगुरु आदि शंकराचार्य ने समस्त भारतवर्ष में भ्रमण कर समाज में ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उनका महत्वपूर्ण योगदान है, उनका अद्वेतवाद मानव जीवन तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली का आदर्श है। जगदगुरु आदि शंकराचार्य के अनुसार, "शिक्षा आत्मानुभूति है।" अर्थात शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को आत्मा की अनुभूति कराये। शिक्षा का कार्य बालक को मुक्ति तथा आध्यात्मिक चेतना का बोध कराना होता है। उनके अनुसार "शिक्षा को मुक्ति या हमारी आध्यात्मिक चेतना को लेने जाना होता है।

जगदगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त के अनुसार, "अच्छा शिक्षक वही होता है जो छात्र को ब्रहम के तत्वों के गूढ रहस्य को समझाये।

इसके लिए शिक्षक की स्वंय भी अज्ञान से मुक्ति होना आवश्यक है।" शंकराचार्य ने शिक्षा का उद्देश्य ब्रह्म साक्षात्कार बताया है–

"एक मेवा द्वितीयं नेह नानास्ति किंचन"

अर्थात "एक विश्व में एक ही सत्ता है, अनेक की सत्ता नहीं।" ब्रह्म तत्व ही वास्विक तत्व है। जीव व ब्रह्म में अन्तर नहीं है। जीव सर्वज्ञ, सर्वव्यापी व सर्व शक्तिमान है। अज्ञानता और अविद्या के कारण हम उस सर्वज्ञ सत्ता को पहचान नहीं पाते। ब्रह्म को जानने से मनुष्य ब्रह्ममय हो जाता है। जीव व ब्रह्म के एक हो जाने के बाद मुक्ति प्राप्त होती है एवं इसे प्राप्त करने पर मनुष्य कह बैठता है – "अहं ब्रह्मास्मि" अर्थात मैं ही ब्रह्म हूँ। तभी उसे आत्म साक्षात्कार प्राप्त होता है। आत्म तत्व के दर्शन के लिए वृहदारण्य (4–5–6) में कहा गया है कि,

"आत्मा व अरे दृष्टव्य श्रोतव्यों, मंतव्यों निदिध्यासितव्यस्च।"

अर्थात इस आत्मा को देखना चाहिए, इस पर मनन करना चाहिए तथा निदिध्यासन द्वारा उसका साक्षात्कार करना चाहिए। शिक्षा का यही परम लक्ष्य है।

आदि शंकराचार्य के अनुसार शिक्षा दो प्रकार की होती है आध्यात्मिक शिक्षा और भौतिक शिक्षा अर्थात परा विद्या व अपरा विद्या। आध्यात्मिक अर्थात परा शिक्षा परमात्मा के संबंध में ज्ञान देती है, इस प्रकार की शिक्षा से व्यक्ति ब्रह्म और आत्मा की एकता को समझ सकता है। अपरा विद्या व्यक्ति को सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है, और वह इंद्रियभोग का आनन्द लेने का प्रयत्न करता है। इन दोनों प्रकार की शिक्षा के आधार पर शंकराचार्य ने पाठ्यचर्या को दो भागों में विभाजित किया है– व्यावहारिक ज्ञान– जिसमें उन्होंने भाषा, चिकित्सा शास्त्र, गणित, आसन, व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य जैसे विषयों का समावेश किया है एवं दूसरा पाठ्यक्रम पारमार्थिक विषय– जिनमे उन्होंने साहित्य, धर्म, दर्शन, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारण, ध्यान एवं समाधि जैसे विषयों व क्रियाओं का समावेश किया है। शंकराचार्य की दृष्टि से वर्ण भेद भी कर्म जनित हैं वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के अलग–अलग कर्मो में विश्वास रखते थे और उन्होने अपने कार्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन करने हेतु अलग–अलग पाठ्यचर्या का विधान करने के पक्ष में थे। परंतु परा शिक्षा के लिए सबको समान ज्ञान एवं समान क्रियाएँ करने पर बल देते थे।

आदि शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्त करने के बाह्य व आन्तरिक दो उपकरण बताये। बाह्य में ज्ञानेन्द्रियां व कर्मेन्द्रियाँ तथा आंतरिक उपकरणों में मन, बुद्धि, और अहंकार तथा चित्त का वर्णन किया। आदि शंकराचार्य के अनुसार इंद्रियां किसी वस्तु के प्रति तभी क्रियाशील होती हैं जब मन तथा वस्तु के बीच संयोजन होता है। बुद्धि इसमें काट छांट कर उसे अहं से जोड़ती है, अहं से ज्ञान चित्त पर अंकित होता है और चित्त से आत्मा को प्राप्त होता है। शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्त करने के चार स्रोत भी बताएं– प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और तर्क। इंद्रियां प्रत्यक्ष को तब तक स्वीकार नहीं करतीं जब तक आत्मा द्वारा प्रत्यक्ष नहीं हो जाता। अनुमान में यह पूर्व अनुभव के आधार पर नए अनुभवों को तर्क द्वारा स्वीकार करने की बात करते हैं। शब्द के रूप में यह निगम (वेद) और आगम (तंत्र) ग्रंथों को श्रेष्ठ मांनते हैं। तर्क का अर्थ है बौद्धिक कसौटी, अतः जब तक इंद्रिय प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान बौद्धिक तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जाता तब तक उसके बारे में सत्य असत्य होना प्रमाणित नहीं हो सकता। शंकराचार्य ने ज्ञान प्राप्ति के भी तीन सोपान बताये हैं– श्रवण, मनन और निदिध्यासन। श्रवण में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद एवं गीता आदि ग्रंथों का गुरुमुख द्वारा श्रवण एवं उनका स्वाध्याय। मनन में श्रवण अथवा अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान पर चिंतन और निदिध्यासन में प्राप्त ज्ञान का नित्य चिंतन एवं प्रयोग। आदि शंकराचार्य श्रवण अथवा अध्ययन के पश्चात प्राप्त ज्ञान पर विद्वानों के साथ वाद विवाद को अच्छा मानते थे। इसी के साथ प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, दृष्टांत विधि और उपदेश विधि को भी वे महत्वपूर्ण मानते थे। आदि शंकराचार्य शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने या मात्र परीक्षा पास करने का साधन नहीं मानते थे उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य आंतरिक शक्तियों को विकसित, प्रशिक्षित तथा अनुशासित करने के साथ–साथ उसे कृत्रिम जीवन जीने की अपेक्षा प्रकृति के निकट संपर्क स्थापित करना सिखाया जाना है और आध्यात्मिक प्रकृति का विकास करके उसमें लोक कल्याण कि भावना का विकास करना है। त्याग, निस्वार्थ सेवा भाव तथा परमात्मा में आस्था रखने वाला व्यक्ति ही समाज तथा राष्ट्र का उत्थान कर सकता है, ऐसा उनका दर्शन था।

जगदगुरु आदि शंकराचार्य अद्वैत वेदांत के प्रणेता थे, उन्होंने अद्वैत वेदांत का सार यह कहकर दिया कि, "ब्रह्म ही एकमात्र सत्ता है।जीव की मुक्ति के लिये ज्ञान आवश्यक है। तथा जीव की मुक्ति ब्रह्म मे लीन हो जाने मे है।" अल्प आयु में इहलोक का त्याग कर देने वाले आदि शंकराचार्य के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति से ऐसी अपेक्षा स्वप्न में भी संभव नहीं है। वे अल्पायु में इतने अलौकिक कार्य एवं अपने दार्शनिक व शैक्षिक विचारों से सभी विचारकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं और फिर यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि उनकी वाणी और लेखन में साक्षात् सरस्वती विराजती थी। इसीलिए आदि शंकराचार्य अपनी अलौकिक प्रतिभा, प्रकाण्ड पाण्डित्य, प्रचण्ड कर्मशीलता, सर्वोत्तम त्याग युक्त अगाध भगवद्भक्ति और योगैश्वर्य से सनातन धर्म की संजीवनी सिद्ध हुए और उन्होंने भारतीय ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के शिक्षा शास्त्रियों तथा दर्शन शास्त्रियों के मध्य अपना एक विशिष्ठ स्थान बनाया। ■

महिला दिवस

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

डॉ. प्रियंका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उद्देश्य महिलाओं की उपलब्धियों को बनाए रखना, महिलाओं द्वारा चुनौतियों को पहचानना और अधिकारों, लैंगिक समानता पर ध्यान केंद्रित करना है। यह पूरे विश्व की महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के बारे में लोगों को स्वीकार करने, जागरूक करने तथा महिलाओं की समानता को तेज करने के लिए आह्वान का दिन है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की पृष्ठभूमि में 28 फरवरी 1909 का दिन है जब अमेरिका के न्यूयॉर्क में महिला गारमेंट श्रमिकों ने हड़ताल की थी जो कि सोशलिस्ट पार्टी द्वारा आयोजित आंदोलन था तब से इस दिन को राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। पहला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 1911 में 19 मार्च को मनाया गया जिसमें ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड ने अधिकारिक रूप से सहभागिता की थी। 1917 में 8 मार्च को पेट्रोग्राद (सेंट पीटर्सबर्ग) रूस में महिलाओं के प्रदर्शन को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में चुना गया था जो रूसी क्रांति के लिए टर्निंग प्वाइंट था। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की 2021 का विषय "choose to challenge" चुनौतियों को स्वीकार करना है। प्रत्येक वर्ष इसका विषय अलग–अलग होता है जो महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य करता है। इस बार का विषय बहुत प्रासंगिक है क्योंकि महिलाएं अपने विचारों और कार्यों द्वारा प्रतिदिन चुनौतियां देती हैं और स्वीकार भी करती हैं। हर साल 8 मार्च को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को नारीत्व का जश्न मनाने और उसकी उपलब्धियों को पहचानने के लिए निर्धारित किया गया है।

अपनी शक्ति को बताने और उसे जमीन पर दिखाने के लिए 2017 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं द्वारा बड़े पैमाने पर हड़ताल की गई। इस वर्ष का विषय था एक दिन बिना एक महिला। day with out a women क्योंकि एक दिन की छुट्टी से अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगेगा। स्कूल में शिक्षक अधिकतर महिलाएं हैं और घरेलू काम ना करने से भी उत्पादकता में कमी आएगी हालांकि निजी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी आज भी बहुत कम है लेकिन अपनी

सामर्थ्य बताने के लिए पर्याप्त है। रिपोर्ट के अनुसार 90 प्रतिशत महिला कामगार अनौपचारिक क्षेत्र में है और उन्हें अधिकारिक आंकड़ों में शामिल भी नहीं किया गया। निश्चित रूप से 21वीं सदी में भी महिलाएं लैंगिक असमानता का दंश झेल रही हैं। प्रो. अमर्त्य सेन ने भारत में सात तरह के असमानता की बात कही। पहली मृत्युदर में असमानता जहां पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की मृत्यु दर अधिक है। दूसरा जन्मत्व असमानता जहां लड़की की अपेक्षा लड़कों के जन्म की प्राथमिकता दी जाती है। तीसरा रोजगार असमानता जहां अधिकतर महिलाओं को पुरुषों की तुलना में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। चौथा स्वामित्व असमानता जहां पारंपरिक संपत्तियों में पुरुषों का पक्ष रहता है पांचवा है विशेष अवसर में असमानता देखने को मिलती है जहां उच्च शिक्षा के अवसर महिलाओं को कम मिलते हैं। छठा है बुनियादी सुविधाओं में असमानता और सातवां हैं घरेलू असमानता जहां घर के कार्य, बच्चों की देखभाल का काम केवल महिलाओं का ही होता है। यदि महिलाओं की भारत में लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन का आंकड़ा देखें तो 1990 में यह आंकड़ा 30 प्रतिशत के लगभग था जो 2020 में यह 19.9 प्रतिशत हो गया हालांकि पुरुषों के श्रम शक्ति भागीदारी में भी कमी आई है और यह आंकड़ा 76.08 प्रतिशत है जो महिलाओं की तुलना में लगभग चार गुना है। इसके पीछे कई कारण हैं जैसे जेंडर वेज गैप, अपनी शिक्षा को पूरा करने में अधिक समय का लगना क्योंकि उच्च शिक्षा को प्राप्त करने के लिए उन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, प्रतिबंधित सांस्कृतिक विचारधारा और फ्लैक्सिबल टाइमिंग का ना होना। बदलते सामाजिक परिवेश में महिलाएं और प्रभावी भागीदारी निभा रही हैं और उच्च शिक्षा प्राप्ति के संदर्भ में लैंगिक समानता के बावजूद आज भी महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में निर्णय लेने में प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है। यह संयुक्त राष्ट्र महासचिव की हालिया रिपोर्ट है। पूरे विश्व में कमोबेश ऐसी ही स्थिति है जहां ऊंचे पद पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। 21वीं सदी की महिलायें कोरोनावायरस की लड़ाई में भी सबसे आगे रही चाहे व स्वास्थ्य क्षेत्र कार्यकर्ताओं के रूप में हो, वैज्ञानिक के रूप में, डॉक्टर के रूप में, या अन्य लेकिन पुरुषों के समकक्ष विश्व स्तर पर यदि तुलना की जाती है तो उन्हें 11 प्रतिशत कम भुगतान मिलता है. 87 देशों की कोविड–19 टास्क टीमों के विश्लेषण में पाया गया है कि उनके भुगतान में केवल 3.5 प्रतिशत में लैंगिक समानता थी। निश्चित तौर पर यह विश्व स्तर के आंकड़े हैं जो सोचने पर मजबूर करते हैं।

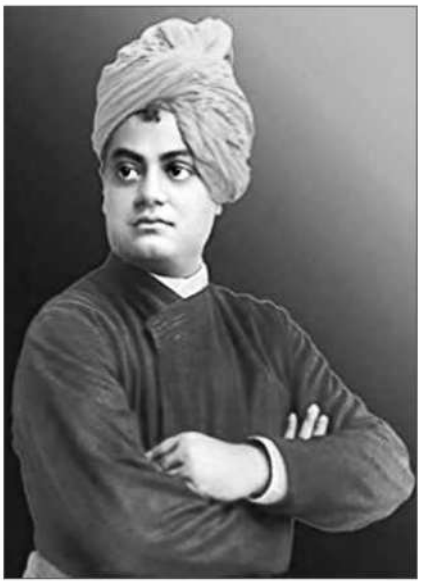

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है, "To Educate your Women first and leave them to themselves, they will tell u what reforms are necessary" पहले अपनी महिलाओं को शिक्षित करें और उन्हें खुद पर छोड़ दें तो वह आपको बताएंगे कि उनके लिए क्या सुधार की आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है कि महिला और पुरुष के कार्यों को बराबरी से देखा जाए उन्हें बराबरी का स्थान मिले। महिला तो स्वयं सशक्त है बस आवश्यकता है उसकी शक्ति को पहचानने की उसके कार्यों को महत्व देने की। क्या पुरातन काल में जो स्त्रियों का स्थान था उनका जो सम्मान था वह 21वीं सदी में पुनः स्थापित नहीं हो सकता? जब महिला आगे बढ़ती है तो वह अपनी सोच और नजरिए से दुनिया के दस्तूर को भी बदलती है इसी कारण आज वह अपने आप को साबित भी करती जा रही है और स्थापित करती जा रही है। ऐसे कई उदाहरण सामने देखने को मिलेंगे जहां महिलाओं ने इस रूढ़िवादी सोच को बदला है और चुनौतियां चुनने का अभियान जारी रखा है। कठिन राह को चुनते हुए सफलता की इमारत खड़ी की है। ऐसी कुछ महिलाओं के उदाहरण हैं जैसे जेसीबी ऑपरेट करना काजल खारी के लिए आम बात है, पूर्वोत्तर रेलवे की पहली लड़की लोको पायलट समता कुमारी है। देश की पहली महिला लाइन वूमेन है, तेलंगाना की सिरीशा और ऐसे कई अन्य उदाहरण। अपनी बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ महिलाएं परिवार में संजीवनी की तरह कार्य करती हैं। वह परिवार की शक्ति भी होती हैं और धुरी भी। अपने समर्पण, सहनशीलता और दृढ़ निश्चय के साथ परिवार को संबल देती हैं। कई बार उसे कसौटी पर तौला जाता है लेकिन उसमें एक अलग प्रकार की शक्ति होती है जो पुरुषों में नहीं होती इसीलिए तो मां बनने का परमसुख भगवान ने केवल महिलाओं को दिया है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक प्रतीकात्मक दिन है क्योंकि हर दिन उनका होता है। ■

पुस्तक समीक्षा

भारत की मौलिक एकता

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
सामान्य अध्येता
भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली

पुस्तक का नाम : भारत की मौलिक एकता
लेखक का नाम: वासुदेव शरण अग्रवाल
प्रथम संस्करण विक्रमी संवत 2011, कुल पृष्ठ-216
पुस्तक का विषय क्षेत्र : भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि में व्याप्त एकात्म भावना
वर्तमान उपलब्ध संस्करण : ईसवी सन 2017
प्रकाशक : नेशनल बुक ट्रस्ट - नई दिल्ली
मूल्य : 150 रुपये

एक परिवार में जब जन्म लेते हैं तो उस परिवार की सांस्कृतिक विरासत, उसकी परम्पराएं, कुल का इतिहास और रीति–रिवाजों से परिचय परिवार के बड़े बुजुर्गों द्वारा किया जाता है। परिवार के सदस्य होने के नाते से परिवार के प्रत्येक सदस्य को जो एकत्व भाव की अनुभूति होती है उसका आधार पारिवारिक विरासत का बोध ही होता है। ठीक उसी प्रकार विश्व की सबसे प्राचीन और सबसे महान संस्कृति के अग्रदूत होने के बावजूद एक लम्बी पराधीनता के कारण ने यह विस्मृत सा हो गया है। पूर्वज जिस विरासत को विकसित करने के पुरोधा थे उसके संवर्धक ये युवा पीढ़ी तब ही बनेगी जब वह राष्ट्र की विरासत और संस्कृति से आत्मानुभूति करने में सक्षम हो।

यह पुस्तक इस उद्देश्य को पूर्ण करने में अवश्य सहायक होगी। पुस्तक भारत के भीतर स्थापित समरसता के चिंतन तथा एकात्मता के आधार पर केन्द्रित है। पुस्तक के लेखक काशी विश्वविद्यालय के विख्यात अध्यापक श्री वासुदेव शरण अग्रवाल जी हैं। पुस्तक को लिखने की प्रेरणा उन्होंने अपने गुरु डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी की अंग्रेजी पुस्तक "द फंडामेंटल यूनिट ऑफ इंडिया" से ली है जो विक्रमी संवत 2010 (ईस्वी सन 1953) में लिखी गई जब भारत की स्वाधीनता के पश्चात विभिन्न क्षेत्रों में भारत को गढ़ने के प्रयास हो रहे थे। पुस्तक के प्रथम संस्करण में कुल 216 पृष्ठ हैं। इस प्रकार से यह मध्यम आकार की बहुत ही अच्छी पुस्तक है जिसे मात्र एक माह में अच्छे से अध्ययन किया जा सकता है।

अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में शिक्षित नवयुवक शिक्षित तो थे किन्तु अपने देश की सांस्कृतिक जड़ों से दूर थे, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लेखक ने अपने विचारों को इस प्रकार से सूत्रबद्ध किया है जिससे इस पुस्तक को पढ़ने मात्र से इस देश के सामान्य नागरिक में अपने देश की राष्ट्रीय अस्मिता और सम्पूर्ण भारतवर्ष में व्याप्त एकात्मता का दर्शन हो सके। पुस्तक 10 अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय "युक्तियां" है जिसके अंतर्गत प्राचीन शास्त्रों में भारतवर्ष और मातृभूमि को लेकर जो विचार अभिव्यक्त किए गए हैं उसकी झलक स्पष्ट करने का लेखक ने उत्तम प्रयास किया है। दूसरा अध्याय आज के नवयुवकों हेतु अत्यंत विचारणीय है जो देश के नाम से सम्बन्धित है क्योंकि देश का प्राचीन नाम भारतवर्ष है जिसका अपना भावार्थ है, जो अपने आप में जीवंत है किन्तु वर्तमान युवा पीढ़ी इसे इण्डिया कहती है जो अंग्रेजों द्वारा दिये गये नाम से प्राचीन संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं हैं। दोनों नामों में बड़ा ही मौलिक अंतर है जिसे शास्त्रीय उदाहरणों के माध्यम से अच्छे से समझाया गया है। तीसरे अध्याय में आर्यों का अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम और भारत के भौगोलिक परिचय पर विस्तार से चर्चा की गई है इस अध्याय को पढ़ते हुए भारत के प्राचीन इतिहास, भारत की नदियों, पर्वतों एवं दुर्गम क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। यह अध्याय अखण्ड भारत माता के स्वरूप का दर्शन कराता है। चतुर्थ अध्याय "पृथ्वी सूक्त" से अभिहित किया गया है और इस अध्याय में भारतीयों द्वारा भूमि को माता रूप में अर्चन किए जाने से सम्बन्धित प्राचीन परम्परा को शास्त्रीय रूप से समझाया गया है। उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक विस्तारित भारत माँ का आंचल और इस आंचल से पोषित होती सत्य–सनातन संस्कृति किस प्रकार से सबका संवर्धन करती है इसका बहुत अच्छा विश्लेषण है। भारत एक आध्यात्मिक राष्ट्र है और ईश्वर की आध्यात्मिक ऊर्जा ही राष्ट्र की प्राण शक्ति है जो समस्त विश्व एवं समस्त ब्रह्माण्ड को, इस सम्पूर्ण अस्तित्व को उसी एक ईश्वर की अभिव्यक्ति स्वीकार करती है। भौतिक रूप से उस आध्यात्मिक शक्ति के जागरण हेतु राष्ट्र में अनेक शक्ति केन्द्र विकसित किये गए जिन्हें तीर्थ स्थल कहते हैं। ऐसे तीर्थ स्थलों एवं अन्य क्षेत्रों का विशद विवेचन अध्याय पाँच में लेखक द्वारा किया गया है। वर्तमान में तीर्थों की उपयोगिता और पूर्वजों द्वारा ऐसे शक्ति केन्द्रों की स्थापना का उद्देश्य समझने में यह अध्याय बहुत ही सहायक सिद्ध होता है।

राष्ट्र के सुधिजन चिरपुरातन काल से आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ आर्थिक और भौतिक समृद्धि के भी परिचायक रहे हैं, आर्थिक और भौतिक समृद्धि से युक्त जीवन किस प्रकार से प्राचीन भारत में विकसित था और सुदूर अन्य देशों से भी किस प्रकार के आर्थिक सम्बन्ध थे उसका विवरण अध्याय छः में मिलता है।

अध्याय सात देश के निवासियों के परिचय से सम्बन्धित है। राष्ट्र एक विशालतम क्षेत्र से युक्त सांस्कृतिक विभिन्नता वाला पुण्य स्थान है जहां पर विभिन्न प्रकार के लोग निवास करते हैं अनेक प्रकार की जातियों उप जातियों और वंश इत्यादि में सामाजिक वर्गों में

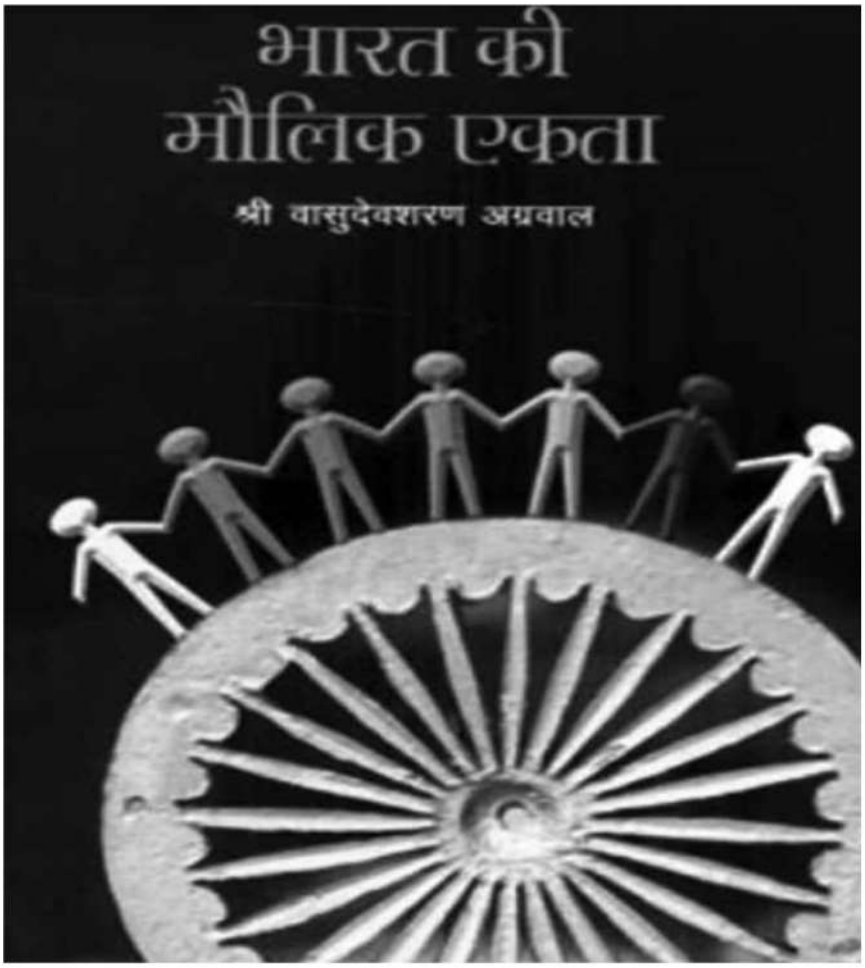

विभाजन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया था जो कालान्तर में विदेशी आक्रान्ताकारियों द्वारा समाज के विखंडन का पर्याय बना। भारतवर्ष में विभिन्न जातियां उपजातियां देश के किस भूभाग में और किस क्षेत्र में निवास करती थी उसका विवरण इस अध्याय में मिलता है।

अध्याय आठ "भाषा एवं साहित्य" देश के भाषा और विपुल साहित्य के परिचय की दृष्टि से लिखा गया है। भाषायी और साहित्यिक संस्कृति दोनों ही रूप से सम्पन्न एवं समृद्ध हैं इसलिए देश के नागरिकों के लिए यह समझना आवश्यक हो जाता है कि हमारे राष्ट्र के स्वरूप में हमारी राष्ट्र की भाषाओं और इसके साहित्य का क्या योगदान है। इसके पश्चात किसी भी राष्ट्र के प्रशासन व्यवस्था से सम्बन्धित विज्ञान, जिसे हमने राजनीति कहा है उसके माध्यम से किस प्रकार प्राचीन काल में सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का कार्य हमारे पूर्वजों ने किया उसका विवेचन अध्याय नौ में मिलता है। विभिन्न राजाओं के द्वारा अलग अलग भूभाग में राज्य किए जाने के बाद भी सम्पूर्ण भारत भूमि एक राष्ट्र के रूप में राजनीतिक दृष्टि से जम्बुदीप के रूप में विश्व में प्रसिद्ध हुई। किस प्रकार से राजा न्याय पूर्वक शासन करते थे और किस प्रकार से अनेक राज्य प्रणालियों में पारस्परिक भेद होते हुए भी देश में विश्व के सबसे प्राचीन सार्वभौमिक राजनैतिक तंत्र को विकसित किया गया। उसके परिचय के साथ साथ इस अध्याय में भारतवर्ष के विभिन्न राजवंशों का भी परिचय प्राप्त होता है।

पुस्तक का अन्तिम अध्याय पुस्तक का उपसन्हारात्मक निष्कर्ष है जो पुस्तक में व्याप्त मूल भावना को समाहित करते हुए भारत के नागरिकों को अपनी मातृभूमि के प्रति, अपने राष्ट्र गौरव के प्रति और अपनी सत्य सनातन संस्कृति के प्रति प्राणशक्ति से भर देने वाला है।

इस प्रकार से यह पुस्तक एक अनूठी पुस्तक है जो भारत की प्राचीन शास्त्रीय प्रणाली के माध्यम से सबको अपनी राष्ट्रीय संस्कृति और सत्य सनातन आध्यात्मिक विरासत से परिचित कराती हुई गौरव की भावना से न केवल पुष्ट करती है अपितु इस एक पुस्तक को पढ़ लेने मात्र से ही पाठक अपने भीतर अपने राष्ट्र को साकार रूप लेता हुआ अनुभव करता है। पुस्तक को पढ़ते हुए समझ सकेगें कि जिस भारत को समझना वर्तमान युग में अत्यंत जटिल है अथवा दुर्भाग्य से अत्यन्त जटिल बना दिया गया है उसको समझने में यह पुस्तक जिज्ञासु पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

अनेक स्थानों पर भारतवर्ष के स्वरूप से सम्बन्धित संदर्भ देने के लिए संदर्भ ग्रन्थों की खोज करते हैं इस पुस्तक में दिए गए संदर्भ निश्चित रूप से उस दिशा में भी सहायक सिद्ध होंगे। ऐसा मानना है कि प्रत्येक भारतीय को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिए। पुस्तक वर्तमान में राष्ट्रीय विमर्श और राष्ट्रहित में समर्पण भाव से कार्यरत भारतीयों को आंतरिक रूप से समृद्ध करेगी। पुस्तक के प्रथम प्रकाशन का पी.डी.एफ. संस्करण भी इन्टरनेट पर उपलब्ध है।

पुस्तक के लेखक डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल जी का जन्म 1904 में लखनऊ में हुआ था। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से परास्नातक करने के पश्चात उन्होंने भारत के पुरातन विज्ञान से सम्बन्धित विषय में विशेष अध्ययन करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की।

वे संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन भाषाओं में लिखे गए भारत के विशिष्ट ग्रन्थों पर उनका बहुत अच्छा अध्ययन था। भारत सरकार के पुरातत्व विभाग में भी आपने महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन किया और पुण्य भूमि भारत के प्राचीन ज्ञान और संस्कृति पर अनेक रचनाएं सृजित कर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन किया। ■

सोशल मीडिया टूलकिट

डॉ. मनमोहन सिंह
छात्र कल्याण प्रमुख एवं कुलानुशासक
गौतमबुद्ध विवि, ग्रेटर नोएडा

दुनिया में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि 767 करोड़ विश्व जनसंख्या में से 420 करोड़ (54 प्रतिशत) लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। यह संख्या फेसबुक पर 274 करोड़, यू–ट्यूब पर 229 करोड़, व्हाट्सएप्प पर 200 करोड़, इंस्टाग्राम पर 122 करोड़, एवं ट्विटर पर 35 करोड़ है। अकेले भारत में व्हाट्सएप्प के 53 करोड़, यू–ट्यूब के 45 करोड़, फेसबुक के 41 करोड़, इंस्टाग्राम के 21 करोड़ एवं ट्विटर के लगभग डेढ़ करोड़ सक्रिय उपयोगकर्ता हैं। दुनिया में सोशल मीडिया के बेतहाशा बढ़ते प्रयोग के साथ ही 'सोशल मीडिया टूलकिट' का चलन भी तेजी से बढ़ा है। भारत में 'सोशल मीडिया टूलकिट' 4 फरवरी 2021 को तब चर्चाओं में आयी जब दिल्ली पुलिस के अपराध प्रकोष्ठ (क्राइम सेल) ने स्वीडन की तथाकथित जलवायु कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग द्वारा ट्विटर पर साझा की गयी किसान आंदोलन सम्बंधित टूलकिट बनाने वालों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की एवं 13 फरवरी को बेंगलुरू निवासी 21 वर्षीय 'दिशा रवि' को इस टूलकिट को संशोधित एवं वितरित करने के आरोपों में गिरफ्तार किया। पुलिस का आरोप है कि 'दिशा रवि' द्वारा संशोधित एवं वितरित की गई टूलकिट को ही ग्रेटा थनबर्ग ने ट्विटर पर साझा किया। जिसके तुरंत बाद यह टूलकिट प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सुर्खी बनी एवं देश–विदेश के लोगों की प्रतिक्रिया आने लगी। यद्धपि इसे भारत में चर्चित होने वाली पहली 'सोशल मीडिया टूलकिट' माना जा सकता है परन्तु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2011 के 'वॉल स्ट्रीट आंदोलन', 2018 के 'जलवायु परिवर्तन विरोध', एवं 2019 के हॉन्ग कॉन्ग आंदोलन में इसने खूब सुर्खियां बटोरी थी।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरने वाली 'सोशल मीडिया टूलकिट' एक ऐसा दस्तावेज (डॉक्यूमेंट) है जिसमें किसी कार्य, अभियान, प्रक्रिया आदि को आगे बढ़ाने, तेज कराने, संपन्न कराने हेतु कार्यवाही, दिशा–निर्देश, सुझाव, सूचना, योजना, रणनीति आदि शामिल होते हैं। आंदोलनों में प्रयोग से लोकप्रियता पाने वाली 'सोशल मीडिया टूलकिट' में आंदोलन को प्रभावी तरीके से संचालित करने, इसकी दिशा एवं दशा की जानकारी जैसे, लोगों द्वारा ट्रेंड किये जाने वाले हैशटैग, वायरल किये जाने वाले मीम्स, चुटकुले, नारे, लेख, विरोध के तरीके, रैली, जुलूस का स्थान एवं रास्ते, हिंसा, उत्पात, क्षति के स्तर आदि का वर्णन कूट भाषा में दिया होता है। टूलकिट को सोशल मीडिया के माध्यम से सामान्यतः उन्ही लोगों के साथ साझा किया जाता है जिनसे आंदोलन को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

टूलकिट की विषय वस्तु इसके उद्देश्य पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए भारत सरकार के 'उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग' के 'बौद्धिक संपदा अधिकार (INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS) लागू करने सम्बंधित टूलकिट में बौद्धिक संपदा अधिकार उल्लंघन की जाँच करते समय पालन किये जाने वाले दिशा निर्देश, लागू नियम, तथा नकली, झूठ, जालसाजी, पायरेसी जैसे शब्दों की परिभाषा शामिल है। 'वर्ल्ड किडनी डे' टूलकिट (https://www.worldkidneyday.org/wp-content/uploads/2020/11/WKD-2021-Social-Media-Toolkit-3.pdf) में गुर्दों (किडनी) के स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता फैलाने वाली जानकारी तथा चित्रों एवं तस्वीरों आदि के माध्यम से स्वयं का सोशल मीडिया अभियान प्रारम्भ करने हेतु सुझाव, ट्विटर चैट्स, कहानियां आदि दी गयी हैं। अमेरिका के खाद्यान्न तथा औषिधि प्रसाशन की पोषण सम्बंधित नए तथ्यों के लेबल वाली टूलकिट (https://www.fda.gov/food/new-nutrition-facts-label/social-media-toolkit&new-nutrition-facts-label), पोषण सम्बंधित नवीनतम शोध के आधार पर पौष्टिक खाद्य पदार्थ चुनने एवं खान–पान की अच्छी आदतें विकसित करने हेतु नए लेबल लगाने पर जोर देती है। वहीं अमेरिका के ड्रेक विश्वविद्यालय ने सामाजिक न्याय से सम्बंधित 23 विषयों पर टूलकिट (https://www.drake.edu/diversity/getinvolved/resources/social-justice-toolkit/) उपलब्ध करायी हैं। स्पष्टतः टूलकिट का प्रयोग केवल आंदोलन/विरोध–प्रदर्शनों तक ही सीमित न होकर, गैर–सरकारी संगठनों/शैक्षणिक संस्थानों/सरकारी विभागों/स्वयंसेवी संस्थाओं आदि द्वारा भी किया जा रहा है।

किसान आंदोलन से चर्चा में आयी टूलकिट की गहराई में जाना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे तैयार, प्रचारित, प्रसारित, साझा करने वालों में स्वीडन, ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका जैसे देशों के नागरिक प्रमुखता से शामिल हैं। गणतंत्र दिवस के दिन राष्ट्रीय प्रतीकों का अपमान, दिल्ली की सड़कों पर हथियारों का खुला प्रदर्शन, आंदोलन को समर्थन देने तक सीमित न रहकर आंदोलन की कार्ययोजना बनाना, हमले कर पुलिस, सुरक्षाकर्मियों को हिंसक प्रतिक्रिया के लिए उकसाने जैसे कृत्यों से अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्रकारियों द्वारा रची गयी साजिश की बू अवश्य आती है। यह आशंका बलवती होना स्वाभाविक है कि कहीं यह नए एवं सशक्त भारत की छवि को धूमिल करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र तो नहीं? अतः भारतीय जनमानुष के मन में कुछ प्रश्न आने स्वाभाविक है। ये षड्यंत्र

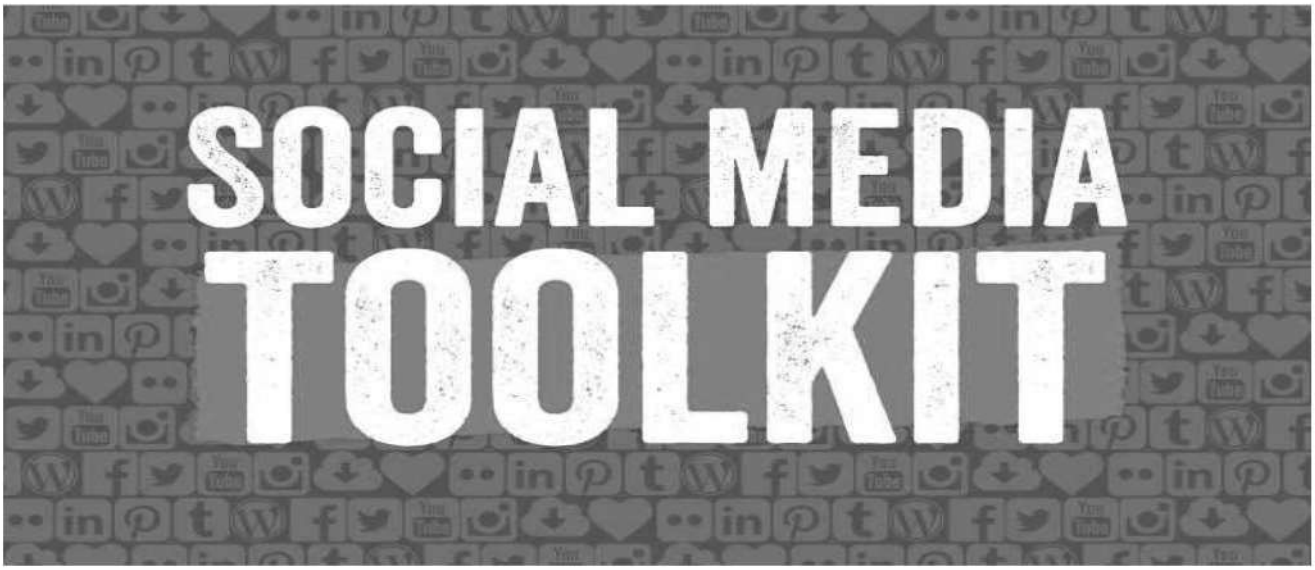

रचने वाली ताकतें हैं कौन? भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश में किसानों के एक हिस्से का संसद द्वारा पारित कृषि कानूनों से असहमत/असंतुष्ट होना, इनका विरोध करना, एवं कानूनों को संशोधित करने की मांग करना न केवल भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता का प्रमाण है अपितु भारत का अंदरूनी मामला भी है. भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहां देशभक्ति किसानों का मूल संस्कार है, जहां सर्वाधिक खेतीयोग्य भूमि हो, कृषि मात्र एक व्यवसाय न होकर एक संस्कार रहा हो, जहां किसान अन्न देने वाली पृथ्वी को मां मानता हो, जहां खेती लगभग 50 प्रतिशत श्रमिकों को नौकरी देती हो, जहाँ सकल घरेलू उत्पाद में खेती का 20 प्रतिशत योगदान हो, क्या ऐसे देश के किसानों को कृषि कानून समझाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बिचौलियों की आवश्यकता है? क्या किसानों को अपने आंदोलन को घड़ियाली आँसू बहाने वाले विदेशी षड्यंत्रकारियों के हाथों की कठपुतली बनने देना चाहिए?

हालिया घटित टूलकिट प्रकरण का दोष केवल विदेशी ताकतों के मत्थे मढ़कर इस घटना के उत्तरदायित्व से इतिश्री करना उचित नहीं होगा। देशवासियों के मन में पुलिस अपराध प्रकोष्ठ, सरकार, गुप्तचर एवं सुरक्षा एजेंसियों से पूछने के लिए भी कुछ प्रश्न होने स्वाभाविक हैं जैसे,

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरने वाली 'सोशल मीडिया टूलकिट' एक ऐसा दस्तावेज (डॉक्यूमेंट) है जिसमें किसी कार्य, अभियान, प्रक्रिया आदि को आगे बढ़ाने, तेज कराने, संपन्न कराने हेतु कार्यवाही, दिशा-निर्देश, सुझाव, सूचना, योजना, रणनीति आदि शामिल होते हैं। आंदोलनों में प्रयोग से लोकप्रियता पाने वाली 'सोशल मीडिया टूलकिट' में आंदोलन को प्रभावी तरीके से संचालित करने, इसकी दिशा एवं दशा की जानकारी जैसे, लोगों द्वारा ट्रेंड किये जाने वाले हैशटैग, वायरल किये जाने वाले मीम्स, चुटकुले, नारे, लेख, विरोध के तरीके, रैली, जुलूस का स्थान एवं रास्ते, हिंसा, उत्पात, क्षति के स्तर आदि का वर्णन कूट भाषा में दिया होता है। टूलकिट को सोशल मीडिया के माध्यम से सामान्यतः उन्ही लोगों के साथ साझा किया जाता है जिनसे आंदोलन को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसान आंदोलन के लम्बे समय से जारी रहने के बाबजूद सुरक्षा एवं गुप्तचर एजेंसियां राष्ट्रभक्त किसानों के बीच में छिपे षडयंत्रकारियों/उपद्रवियों की मनसा भांपने में असफल क्यों रही? जिस दिन दिल्ली सबसे सुरक्षित समझी जाती है, उस दिन उपद्रवी गणतंत्र को कलंकित करने वाली घटना को अंजाम कैसे दे पाए? क्या किसानों की स्थिति से अनभिज्ञ रहना ग्रेटा, मियां खलीफा एवं मीना हेरिस जैसी किशोरियों के ट्वीट्स पर प्रतिक्रिया देना आवश्यक था? षड्यंत्रकारियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को बदनाम करने की साजिश का दंड कैसे सुनिश्चित होगा?

सोशल मीडिया के दौर में टूलकिट निर्माताओं का यह दायित्व है कि टूलकिट प्रमाणिक हो एवं धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता, समानता, अखंडता, विश्व–बन्धुत्त्व, क्षेत्रीय अखंडता, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि को सुदृढ़ करने वाली हो। शांति स्थापित करने के लिए नोबेल पुरुस्कार देने वाले स्वीडन एवं अन्य देशों को नए एवं समर्थ भारत में अस्थिरता, अशांति, हिंसा फैलाने वालों को प्रश्रय देने से बचना चाहिए। अतः देश में ऐसा तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है जिससे षड्यंत्रकारी एवं विघटनकारी शक्तियों के इशारों पर नाचने वाले तत्व पैर न जमा पाएं। राष्ट्रीय अस्मिता एवं सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए सर्जिकल स्ट्राइक एवं बालाकोट हवाई हमलों जैसी कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए देश के गुनहगारों को दुनिया के किसी भी कोने में जाकर सजा देनी की इजराइल एवं अमेरिका जैसी नीति का भारत द्वारा अनुसरण करने की आवश्यकता है। ■

सामाजिक सरोकार

एक देश, एक विधान, एक भाषा, एक निशान

डॉ. उर्विजा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
एस. डी. पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद

नई शिक्षा नीति 2020 में कई प्रश्न एवं कई समाधान का उल्लेख किया गया है। इस शिक्षा नीति के साथ ही जो सबसे महत्वपूर्ण सुधार व संशोधन है वे भाषायी प्रश्नों को लेकर हैं। मातृभाषा में शिक्षा इसका सबसे स्वागत योग्य कदम है। भाषा जो स्वयं में हमारा स्वभाव व संस्कार है, यदि शिक्षा का माध्यम हमारी मातृभाषा हो तो इससे अधिक सराहनीय बात संभव ही नहीं है। मेरी मातृभाषा हिन्दी है अतः उसको पाकर मनन मेरा सहज संस्कार है।

इसी के साथ विगत कुछ वर्षों से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी द्वारा दिया गया नारा 'एक देश, एक विधान, एक भाषा, एक निशान' चरितार्थ होता हुआ दिखाई दिया। ध्यातव्य है कि संसद में अनुच्छेद 370 को लेकर हुई बहस में कई प्रश्न उभरे। इन प्रश्नों से एक प्रश्न मेरे मस्तिष्क में निरंतर कौंधा कि हिन्दी को वह सम्मान कब मिलेगा जिसकी वह अधिकारिणी है।

किसी भी राष्ट्र की पहचान केवल उसकी आर्थिक सम्पन्नता, राजनीतिक सशक्तता, वैश्विक उपस्थिति से नहीं होती वरन् उसकी सांस्कृतिक सम्पन्नता, बौद्धिक सघनता, आध्यात्मिक आदर्शों से भी होती है। वास्तव में उक्त सभी मापदण्डों को भारत पूरा करता है क्योंकि प्राचीनकाल से ही भारत एक समृद्ध और गौरवशाली परंपरा को समेटे हुए है।

भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान–विज्ञान की संवाहक यदि कोई भाषा है तो वह हिन्दी है। संस्कृत वांगमय का वैभव, बोलियों की वाचिक परंपरा की विरासत भारतीय भाषाओं का साहित्यिक, सांस्कृतिक वैभव हिन्दी ने हस्तांतरित करके प्रसारित किया है। हिन्दी समाज की भीतरी आवश्यकता है। अन्तर्द्वन्दों और व्यवस्था के अन्तर्विरोधों को सामने लाकर भारत की आकांक्षा और उसके निर्माण की दिशाएं हिन्दी ही उद्धारित कर सकती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी 'राष्ट्रभाषा' को लेकर एक सही नीति क्यों नहीं बना पाये? राष्ट्रभाषा बनाम राजभाषा, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, भाषायी–विरोध की उलझनों में क्यों संलग्न रहे ? एक भाषा, एक राष्ट्र क्यों नहीं बना पाये? इसका कारण कहीं न कहीं राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव दलगत राजनीतिक स्वार्थ, क्षेत्रीयता एवं स्वार्थी महत्वकांक्षाए ही हैं। अब समय आ गया है कि जिस प्रकार एक राष्ट्र की नीति को अपनाया गया है, उसी प्रकार एक भाषा को भी दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देकर अंगीकृत किया जाये। अंतर–प्रांतीय विरोध को समाप्त किया जाये। इसके लिए हिन्दी को सार्वकालिक भाषा के रूप में स्वीकार किये जाने की आवश्यकता है। संविधान में यथानुरूप संशोधन किया जाना अपरिहार्य है। न्यापालिका, प्रशासनिक कार्यों, बैंकिंग, संचार, शैक्षिक संस्थाओं में यथासंभव हिन्दी को बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है।

आज के वैज्ञानिक युग में हिन्दी को विज्ञान की भाषा, तकनीक की भाषा, संचार की भाषा बनना होगा, तभी संयुक्त शहर संघ की प्रमुख भाषाओं में स्थान पा सकेगी। इसके लिए हिन्दी भाषा की जनसाधरणा के अन्तःकरण को स्पर्श करना होगा। अभिजात्य वर्गीय हिन्दी ज्ञानेप्सा तुष्टि का साधन बन सकती है, व्यक्ति–विशेष की पहचान करा सकती है, हिन्तु भारतभूमि पर अविरल प्रवाहिनी बनने के लिए हृदय के उद्गारों को व्यक्त करने का माध्यम बनना पड़ेगा। यद्यपि हिन्दी वर्तमान में विश्व–भाषा के रूप में लोकप्रिय हो रही है, किन्तु जब तक भारत में संपूर्ण देश की प्रतिनिधि नहीं बनेगी। तब तक विश्व–स्तर पर वह स्थान नहीं पा सकेगी। इसके लिए विषय स्तर पर भी पाठयक्रम को रोचक एवं समकालिक बनाने की आवश्यकता है। तब तक हिन्दी रोजगार की भाषा नहीं बनेगी, तब तक सारे प्रयास निष्प्रभावी ही रहेंग। हिन्दी के उत्थान को सामाजिक राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप देकर भारतीय जनमानस को हीनता की ग्रंथि से मुक्ति दिलाना, हिन्दी के मनीषियों का युगधर्म होना चाहिए।

वर्तमान समय में यद्यपि हिन्दी अपनी संरचनात्मक, मनोवैज्ञानिकता, प्रभविष्णुता तथा विपुल शब्द संपदा के कारण विश्व भाषा के रूप में मंचस्थ होगी, निश्चित रूप से उस भाषा की गरिमा और महिमा, सार्वदेशिकता और समृद्धि स्वतः सिद्ध हो जाती है। हिन्दी भाषा में यही सामर्थ्य है जिसके कारण एक राष्ट्र–एक भाषा स्वतः स्वीकारणीय है। ■

सिने विमर्श

अराजकता की जद में ओ.टी.टी.

डॉ. यशार्थ मंजुल
सहायक प्रोफेसर
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी वि.वि., वर्धा

पिछले वर्ष अक्टूबर में मेवात में घटी एक घटना ने पूरे भारत का ध्यान अपनी ओर खींचा। तौसीफ नाम के युवक ने 'मिर्जापुर' नामक एक बहुचर्चित वेब सिरीज के किरदार से प्रभावित होकर निकिता नामक एक युवती की हत्या कर दी। हम सबके मोबाइल, लैपटाप, टेलिविजन, आई पॉड इत्यादि पर बड़ी आसानी से प्राप्त हो रही दृश्य–श्रव्य सामाग्री हमें कैसे प्रभावित कर रही है ये उसका एक छोटा सा उदाहरण है। दृश्य–श्रव्य सामग्री कई स्तरों पर मनुष्य के निर्णय और विचार को प्रभावित करती है। भारत में सिनेमा के आगमन के बाद से ही इसका एक प्रामाणिक इतिहास है। इक्यावन वर्ष पूर्व सन 1969 में K.A . Abbas Vs Union of India नामक एक मामले में भारत के उच्चतम न्यायालय ने सेंसरशिप के पक्ष में फैसला सुनाते समय माना था कि 'सिनेमा अपने दौर की विभिन्न कलाओं से पूर्णतः भिन्न है और इसका सामाजिक, व्यतिगत और भावनात्मक प्रभाव दृश्य विन्यास के कारण अन्य कलाओं से कहीं ज्यादा अधिक है'। इस फैसले के दौरान कोर्ट ने ये भी माना था कि दृश्य–श्रव्य सामाग्री का प्रभाव बच्चों पर और अधिक होता है। पिछले कुछ सालों से दृश्य–श्रव्य सामग्री के उत्पादन हेतु तकनीक सस्ती और विकेंद्रित हुई है, दृश्य विन्यास अपने सभी तत्वों के कारण पहले से ज्यादा कलात्मक, प्रभावशाली और यथार्थवादी हुआ है। इंटरनेट और मीडिया के फैलाव के कारण बड़ी मात्रा में इसके उत्पादन के साथ ही अब दृश्य–श्रव्य सामग्री में एक किस्म की अराजकता भी देखने को मिली है। लंबे समय तक इस अराजकता को खुली छूट प्रदान थी। इसी कारण ओ.टी.टी प्लैटफार्म पर बहुत ही औसत दर्जे की सिरीज भी नग्नता, संवादों में अश्लीलता और सिनेमाई फॉर्मूला के कारण चर्चा का केंद्र बनी रहीं। इसी चर्चा के कारण कुछ बेहद कलात्मक रूप से बनी अन्य वेब सिरीज भी दर्शकों के बीच अपनी पैंठ नहीं स्थापित कर पायीं।

कला का मूल्यांकन बिना उसके ईंटेंट (मंशा) को समझे करना मुश्किल है। पिछले कई वर्षों से औसत दर्जे की सिरीज के ईंटेंट (मंशा) में एक किस्म का पैटर्न नजर आता है। वो ईंटेंट (मंशा) निर्माणकर्ताओं के द्वारा मात्र धन कमाना और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच विघटन और विद्वेष की भावना को पनपाना रहा है। इसका हाल ही का उदाहरण है अली अब्बास जफर द्वारा निर्देशित 'तांडव'। एक फिल्मकार की तरह अली अब्बास जफर ने पूर्व में जिस तरह की फिल्मों का निर्माण किया है उनमे भी फॉर्मूलाबद्धता, कलात्मक सौन्दर्य दृष्टि का आभाव, दर्शकों के बौद्धिक और मानसिक विकास के बदले निम्नस्तरीय, कुत्सित और कुरुचिपूर्ण फिल्म दृश्यों के प्रति नशीला आकर्षण उत्पन्न करने का प्रयत्न, सामाजिक और मानवीय समस्याओं की उपेक्षा और मात्र धन कमाने की लिप्सा ही नजर आती है। अली अब्बास जफर के द्वारा बनाई गयी वेब सिरीज 'तांडव' भी इसी कड़ी को आगे ले जाती है, ये फेक न्यूज का एक कोलाज भर है जिसमे फिल्म निर्माण के विभिन्न उपकरणों के माध्यम से इन फेक न्यूज को और अधिक प्रभावशाली बनाने और दिखाने का प्रयत्न किया गया है। पटकथा

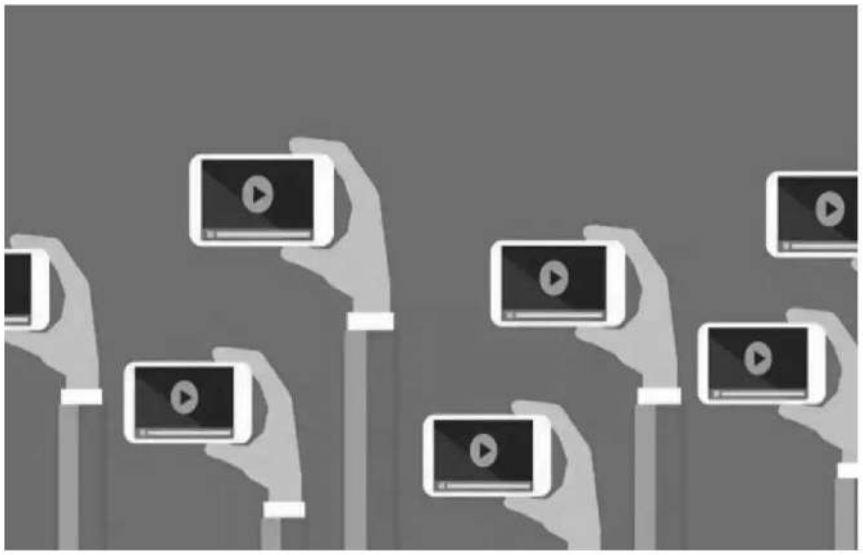

में अनुसंधान और शोध की कमी के कारण ये वेब सिरीज बेहद ही सतही साबित होती है, जिसमें भारतीय संस्कृति के प्रतीकों के प्रति दुर्भावना भी उजागर होती है। कश्मीर जैसे संवेदनशील विषय पर भी इस वेब सिरीज के संवाद भी भारतीय पक्ष के विरोध में लिखे गए हैं। हाल ही में नेट्फ्लक्स पर प्रदर्शित, विक्रम सेठ के मूल उपन्यास पर आधारित 'अ सुटबल बॉय (A Suitable Boy) में तो विक्रम सेठ द्वारा लिखे गए मूल उपन्यास के अनुरूप पटकथा नहीं लिखी गयी। उपन्यास के महत्वपूर्ण अंशों को पटकथा में रूपांतरित करने में बदलाव किए गए, इसे रूपान्तरण कर्म में सैद्धान्तिक रूप से गलत माना जाता है। कारण भारत की सनातन संस्कृति के प्रति दुर्भावना व्यक्त करना ही था। कुछ ही दिन पहले नेट्फ्लक्स पर 'बॉम्बे बेगम' नामक सिरीज स्ट्रीम होना शुरू हुई। इसमें भी अवयस्कों के चित्रण को लेकर राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के द्वारा कुछ जरूरी प्रश्न उठाए जा रहे हैं। वेब सिरीज में इस तरह का पैटर्न और ईंटेंट (मंशा) वेब सिरीज के कलत्मक आभाव के बाद भी उसे चर्चा के केंद्र में ले आता है। समाज को इन उपकरणों के माध्यम से एक सार्थक और सकारात्मक विमर्श दिये जाने के लिए बड़ी मात्रा में कलात्मक सौन्दर्य और कहानी की कसौटी पर खरी उतरती भारतीय दृष्टि को प्रोत्साहित करती हुई दृश्य श्रव्य सामाग्री बनानी होगी, जो कला शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय मूल्यों को केंद्र में रखकर ही संभव हो सकता है।

वर्तमान में कई बहुचर्चित वेब सिरीज में ईंटेंट (मंशा) और पैटर्न के कारण ही सरकार द्वारा कुछ दिशा निर्देश जारी किए गए थे। इन दिशा निर्देशों में स्वनियमन की बात की गयी है जिसका दायरा भी स्पष्ट कर दिया गया है। केंद्र सरकार ने किसी भी तरह के प्री–सेंसरशिप की व्यवस्था को नहीं लागू किया। हालांकि 'तांडव' वेब सिरीज पर सुनवाई के दौरान सूप्रीम कोर्ट में जस्टिस अशोक भूषण की अध्यक्षता में बनी एक पीठ ने भारत सरकार द्वारा जारी इन दिशा निर्देशों को नख–दंत विहीन बताया और इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने की बात कही थी। भविष्य में सरकार से ऐसी व्यवस्था की उम्मीद भी की जा सकती है जो इन वेब सिरीज से उत्पन्न होने वाली सामाजिक अराजकता और दुर्भावना पर अंकुश लगा सके। अन्य विकसित देशों में तो ओ.टी.टी. के विनियमन के लिए तो बकायदा दंडात्मक और कड़े प्रावधान भी हैं। इन प्रावधानों के पीछे का मूल यह है कि 'अभिव्यक्ति कि स्वतन्त्रता असीमित नहीं है, ये वहाँ समाप्त होती है जहां आपराधिक कानून शुरू होता है'।

भारत में सिनेमा का आगमन एक सांस्कृतिक उपकरण के रूप में हुआ था। सांस्कृतिक प्रतीकों को देखने की प्रबल इच्छा ने भारत की पहली फिल्म को जन्म दिया। टेलिविजन की शुरुआत भी भारत में सामाजिक बदलाव के उपकरण के रूप में हुई जिसके केंद्र में सामूहिक चेतना और वैज्ञानिक दृष्टि का विकास था। डिजिटल के पदार्पण से तकनीक सस्ती हुई और टेलिविजन और फिल्म के बीच की रेखा ओझल हो गयी। सामूहिकता और सामूहिक चेतना के विकास के ये साधन देखते ही देखते व्यक्ति केन्द्रित हो गए। आज ओ.टी.टी. पर दृश्य–श्रव्य सामग्री की भरमार है। कुछ बेहतर और काफी कुछ फूहड़। जाहीर है ओ.टी.टी. की दृश्य–श्रव्य सामाग्री मानसिकता में बदलाव को ध्यान में रखकर नहीं बनाई जा रही बल्कि वो मनुष्य के मानसिकता के हिसाब से ही उसे प्रस्तुत की जा रही है। ये निजता का मामला नहीं बल्कि कुंठित हो रही मानसिकता को और बल प्रदान करना है। भारतीय परंपरा के अनुसार धर्म कला का सही और चिरकालीन साथी है। धर्म लोगों को जिस बात की शिक्षा देता है। कलाकार शिल्प के रूप में उसे निकट लाता है। कला और धर्म दोनों में मूल अनुभूति का क्षेत्र मनुष्य का ईश्वर से संबंध होता है। वर्तमान में बनाई जा रही वेब सिरीज कला की इस भारतीय परंपरा से कोसो दूर है, वो मात्र अराजकता, अश्लीलता और राजनीति का एक उपकरण बनता जा रहा है। इसके लिए एक मार्ग खोजना जरूरी है। सरकार और सिविल सोसाइटी के द्वारा इस ओर मंथन अबाध गति से चल रहा है। देखना ये है कि सरकार, उच्चतम कोर्ट के आदेश के बाद इस ओर क्या रुख अपनाती है। ■

राष्ट्रीय पुनरूद्धार और सामाजिक सरोकार में मीडिया की भूमिका

डॉ. रीना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
एस.डी.पी.जी. कॉलेज, गाजियाबाद

प्रजातांत्रिक देशों में से एक भारत में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के कार्यों पर नजर रखने के लिए मीडिया को चौथे स्तंभ के रूप में जाना जाता है। 18वीं शताब्दी के बाद से खासकर फ्रांसीसी क्रांति के बाद कार्य को बहुत प्रशंसनीय ढंग से किया है। मीडिया का रूप अथवा भूमिका सकारात्मक हो तो किसी भी संस्था, समूह और समाज को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

मीडिया एक ऐसा यंत्र है जो मौन को मुखरित बनाता है, अनसुने को सुनाता है और अदृश्य को दृश्य बनाता है। राष्ट्र का उत्थान तभी होता है जब उसके प्रत्येक समाज की उन्नति हो और प्रत्येक समाज तब आगे बढ़ता है जब उस समाज की इकाई व्यक्ति स्वयं अच्छा इंसान बने और यदि वह व्यक्ति मीडिया में है तो उसका दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। राष्ट्र का उद्धार मीडिया बहुत सरलता से कर सकता है क्योंकि मीडिया जन–जन तक पहुंचता है। समाचार पत्र हो, टीवी हो, या फिर सोशल नेटवर्किंग कहीं कोई घटना घटती है, कहीं अनाचार होता है, चाहे वह घरेलू हिंसा हो उन सबको मीडिया सबसे पहले स्वर देता है। ये सारी बातें लोगों तक पहुंचती है। समाज में आक्रोश होता है, क्रांतियां होती है और दुराचार के प्रति मुहिम शुरु होती है, कुछ हद तक इन सभी मुहिमों को सफलता भी प्राप्त होती है। दहेज प्रथा हो या नारी की प्रताड़ना पहले मीडिया ही सामने लाती है। आज तो नशाबंदी, अशिक्षा को दूर करना, अनाथों का संरक्षण, वृद्धों का संरक्षण सब मीडिया के कारण ही संभव है। क्योंकि यदि मीडिया समाज में व्याप्त बुराई को उजागर करता है तो अच्छाई को भी लोगों तक पहुंचता है। मीडिया ने कुछ किया हो या न किया हो पर एक खास किस्म की नैतिकता को समाज में जन्म दे दिया है। जैसे समाज में भ्रष्टाचार न हो, जवावदेही हो, शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, महिला आरक्षण आदि सभी सरकारी योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन हो।

आजादी से लेकर अब तक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक सहित भारतीय मीडिया का स्वरूप भी काफी बदला है। जहां तक मीडिया और समाज के संबंधों की बात है तो वो संबंध पहले से कहीं अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। पूर्व में मीडिया का सामाजिक सारोकार तो होता था लेकिन जैसे संबंध आज है वह तो काल्पनिक ही था। आम मनुष्य की आवाज को राष्ट्रीय आवाज बनाने का एक मात्र क्षेत्र मीडिया को ही जाता है। इसका प्रत्यक्ष एवं सफलतम उदाहरण जेसिका लाल केस है। मीडिया ने ही इस केस को फिर से खुलवाया। जिस काम को सालों से हमारे प्रशासन, न्यायालय और पुलिस नहीं कर सके, उसे मीडिया ने कर दिखाया।

आज हर व्यक्ति हर विषय के बारे जागरूक है, तो उसका श्रेय भी मीडिया को ही जाता है। आजकल एक आम व्यक्ति भी अपनी आवाज प्रशासन, शासन, पुलिस तक पहुंचाने के लिए मीडिया का ही सहारा लेता है। आज प्रत्येक भारतीय व्यक्ति न तो भ्रष्ट नेताओं पर न ही अधिकारियों पर न ही पुलिस पर भरोसा करता है, वह भरोसा करता है तो मीडिया पर। क्योंकि जब आम व्यक्ति की बात मीडिया तक पहुंचती है तो चाहे वो सरकार हो या प्रशासन या अधिकारी उसे उसकी बात सुननी पड़ती है और उचित कार्यवाही करनी पड़ती है।

वर्तमान में हमारी मीडिया ने कई रूढ़ियों को तोड़ा है और अंधविश्वास को भी कम करने का निरंतर प्रयत्न किया है। जब भगवान की मूर्तियों द्वारा दूध पीने की अफवाह पूरे देश में सब जगह फैल रही थी, वहीं मीडिया ने ही उसका वैज्ञानिक पक्ष सबके सामने लाया था। परन्तु इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि हमारा मीडिया आस्था को क्षुण्ण करता है जबकि वह अंधविश्वास व रूढ़ियों के अनुचित प्रयोग के खिलाफ आवाज उठाता, अच्छे संगठन और उनमें हुई राष्ट्र भक्ति की चर्चाएं देश को आगे ले जाने के निर्धारित उपाय भी समाज और राष्ट्र के समक्ष मीडिया ही रखता है। राम मंदिर निर्माण की सफलता में मीडिया की भूमिका कौन भूल सकता है? जिसने विभिन्न प्रकार से हर भारतवासी के जज्बे को जिंदा रखा है। विभिन्न चैनलों पर देश के पक्ष में होती चर्चाएं प्रमाणित करती हैं कि किसी देश के या किसी समाज के पुनरुद्धार में मीडिया की अहं भूमिका है। संवाद, आलेख, कहानी, नाटक, विचार विमर्श जैसी पद्धतियों का सहारा लेकर मीडिया बडे–बड़े प्रयत्न कर रहा है।

मीडिया ही सामज का निर्माण व पुनर्निर्माण करता है। इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने उसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया। मीडिया की ताकत के आगे बड़े से बड़ा नेता, उद्यमी सभी नतमस्तक है। मीडिया का जन–जागरण में भी बहुत बड़ा योगदान है। बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का अभियान हो या एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य या कोविड की

वैक्सीन लगवाने का कार्य, मीडिया ने अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाई है। लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करना, बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए प्रयास करना, तम्बाकू, धूमपान के खतरों से अवगत कराना जैसे अनेक कार्यों में मीडिया की भूमिका सराहनीय है। मीडिया समय–समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है। समय–समय पर स्टिंग आपरेशन कर नेताओ/अधिकारियों का काला चेहरा दुनिया के सामने भी लाता है।

मीडिया का एक रूप सोशल मीडिया वर्तमान दौर में एक बहुत ही सकारात्मक भूमिका को अदा करता हुआ प्रबल होता जा रहा है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए है जिनसे कि लोकतंत्र और अधिक समृद्ध हुआ है। हम ऐसे कई उदाहरण देख सकते हैं जो इस वक्तव्य की पुष्टि करते हैं, जिनमें से 'इंडिया अगेन्स्ट करप्शन' को देख सकते हैं। जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बड़ा अभियान था जिसके कारण एक विशाल जन–समूह अन्ना हजारे आंदोलन से जुड़ा और उसे प्रभावशाली बनाया।

वर्तमान में विभिन्न प्रदेशों में शहरों में हुए चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों ने जमकर सोशल मीडिया का उपयोग कर आम व्यक्ति को चुनाव के प्रति जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मीडिया के माध्यम से ही निर्भया कांड में निर्भया को न्याय दिलाने के लिए विशाल युवा जन समूह सड़कों पर आ गये ओर दबाववश सरकार को एक नया एवं ज्यादा प्रभावशाली कानून बनाने पर मजबूर हुई।

मीडिया की बहुआयामी भूमिका को देखते हुए कहा जा सकता है कि मीडिया हितकारी भूमिका में सामने आयी है। मीडिया के द्वारा ही आम आदमी वर्तमान कठिनतम् स्थितियों के साथ सामंजस्य बनाने में सक्षम हुआ है। मीडिया की भूमिका समाज तथा राष्ट्र के पुनरूद्धार में अति महत्वपूर्ण है। इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता। मीडिया ही अपनी उत्तम कार्यप्रणाली से राष्ट्र और समाज को उन्नति के पथ पर चला सकता है। यही उसकी लिए चुनौती भी है। ■

पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूपः आधुनिकता और तकनीकी विकास के विशेष संदर्भ में

नेहा कक्कड़
रेडियो जॉकी, आकाशवाणी

पत्रकारिता जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है, सरकार जब कार्यपालिका,विधायिका और न्यायपालिका की मदद से देश और देशवासियों के लिए कार्य करती है तो ये चौथा स्तंभ जनता और सरकार के मध्य सेतु की भूमिका निभाता है सरकार की नीतियों पर विवेचक और आलोचक की भूमिका का वहन करता है। बेशक आज पत्रकारिता का तौर तरीका बदल चुका है सूचना संप्रेक्षण में तकनीक का पुट भी शामिल हो चुका है।

आज तकनीकी क्रांति का दौर है हाईटेक होने की जरूरत है। डिजिटल इंडिया की ओर हम सभी के कदम बढ़ रहें हैं। ऐसे में पत्रकारिता इससे अछूती कैसे रह सकती है, जब भी कोई नया ट्रेंड स्थापित होता है तो समाज उस ट्रेंड से बहुआयामी रूप से प्रभावित होता है। भारत के डिजिटल इंडिया में परिवर्तित होने पर भी ये प्रभाव स्पष्ट देखा जा रहा है। एक ओर इकोनॉमी पेपरलेस हुई, ऑनलाइन बैंकिंग व अन्य ऑनलाइन सुविधाओं ने जीवन को सरल और समाज में पारदर्शिता को दुरुस्त किया, वहीं दूसरी ओर ऑनलाइन फ्रॉड, हैकिंग, निजता पर घात व फेक नैरेटिव के जाल को भी बढ़ावा मिला ।

अब सुबह, चिड़ियों की चहचहाट के साथ–साथ मोबाइल के नोटिफिकेशन्स से भी होती है। यह डिजिटल इंडिया की सुलभता और ऑनलाइन मीडिया का बढ़ा क्रेज ही है जिसको अपनाते हुए तमाम चौनल, अखबार, पत्रिकाएं अपनी न्यूज वेबसाइट के माध्यम से अपने दर्शकों का ध्यान खींचने में लगे हुए हैं। ऐसे में इंटरनेट अब पत्रकारिता का नया स्रोत, टूल बन गया है, निश्चित रूप से तकनीकी विकास ने पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को प्रभावित किया है अब ये प्रभाव कितने सकारात्मक और नकारात्मक हैं ये जानने के लिए बहुत जरूरी है कि पत्रकारिता में हुए तकनीकी विकास खास कर ऑनलाइन जर्नलिज्म के नए ट्रेंड को समझा जाए।

चाहे अखबार पढ़ने से लेकर टेलीविजन देखना हो या रेडियो सुनने से लेकर फिल्म देखना हो, डिजिटल मीडिया के आने से इनकी उपयोगिता कहीं न कहीं प्रभावित हुई है क्योंकि अखबार अब लैपटॉप पर या स्मार्टफोन पर उपलब्ध है और भागदौड़ की जिन्दगी में चलते चलते पढ़ लिया जाता है। मीडिया के डिजिटलीकरण ने न केवल उपभोग और उपभोगिता का नजरिया बदला है बल्कि संदेश निर्माण में भी काफी परिवर्तन आया है। पत्रकारिता के इस नए स्वरुप को समझकर ही पत्रकारिता में तकनीकी की भूमिका को समझ पाना सहज होगा और वो नया स्वरूप है ऑनलाइन मीडिया का, जिसको 'डिजिटल मीडिया' और 'कन्वर्जेन्स मीडिया' भी कह दिया जाता है।

पिछले एक दशक में ऑनलाइन मीडिया के प्रचलन में व्यापक वृद्धि देखी गई और कोविड काल के बाद तो 'प्रत्यक्षम

किम प्रमाणं। कहा जा सकता है कि जिस प्रकार इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी ने समूचे विश्व को जोड़ा और संभाला है उस से ऑनलाइन मीडिया की अन्तरक्रियशीलता से लोगों की भागीदारी अब केवल कंज्यूमर तक ही सीमित न होकर, कंटेंट प्रोड्यूसर की भी होने लगी है लाइक, शेयर और कमेंट के अलावा विभिन्न न्यूज पोर्टल्स द्वारा सिटीजन जर्नलिज्म को पुरजोर बढ़ावा मिल रहा है, "iReport for CNN" इसका एक प्रत्यक्ष उदहारण है। आज इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी ने तमाम मीडिया माध्यमों को अपनी ओर अभिसरण कर दिया है क्योंकि अब संचार के सभी माध्यम इंटरनेट पर हैं और खबरों के सम्प्रेक्षण की होड़ में एक दूसरे से आगे रहना चाहते है और हो भी क्यों न? आखिर इंटरनेट के कारण (अव्यवहितत्व)? की सुविधा जो प्राप्त है फेसबुक लाइव और पेरिस्कोप इसका एक प्रबल उदाहरण है। ऑनलाइन मीडिया की व्यापक डाटा संग्रह शक्ति और कड़ियों को जोड़ने की सुलभता इसकी विशालता और प्रबलता को चिन्हित करती है। भारत में डिजिटल मीडिया की बात करे तो 462 मिलियन इंटरनेट यूजर के साथ विश्व में दूसरे स्थान पर स्थित है।

www.internetlivestats.comके डाटा के अनुसार 34.8 प्रतिशत इंटरनेट का प्रवेश हो चुका है। मिनिस्ट्री ऑफ कम्युनिकेशन्स एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोग्राम को घर–घर तक पहुंचाने का काम किया गया ताकि रोजमर्रा के जीवन में सूचना क्रांति और सूचना सुलभता के साथ डिजिटल मीडिया को प्रोत्साहित किया जा सके।

प्रमुख तीन बिंदुओं पर डिजिटल इंडिया अभियान को केंद्रित किया गया।

1) प्रत्येक नागरिक के लिए एक मुख्य उपयोगी के रूप में डिजिटल बुनियादी ढांचा तैयार करना।

2) शासन और मांग पर सेवा।

3)नागरिकों के लिए डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ाना।

डिजिटल इंडिया अभियान द्वारा निश्चित ही इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा रहा है। इंटरनेट की सुलभता ने हर व्यक्ति को हाथ में मोबाइल और मोबाइल में कैमरा देकर जन जन को कंटेंट प्रोड्यूसर बना दिया है जहाँ से डिजिटल इंडिया की वर्त्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सफर भी आरम्भ होता है। ये तो इंसानी फितरत है की प्रकृति हो या टेक्नोलॉजी जब आसानी से पहुंच में हो, तो उपयोग से दुरूपयोग का सफर बहुत जल्दी तय कर लिया जाता है सोशल मीडिया जैसे माध्यम पर आसानी से अब्यूजिव, फेक, अश्लील सामग्री की उपलब्धता समाज को जिस हनन की ओर ले जा रही है जगजाहिर है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर, मनोरंजन के नाम पर सोशल मीडिया, समाज को खास कर युवाओं को जाने अनजाने साइबर क्राइम से भी जोड़ता जा रहा है। फेक इनफार्मेशन के जाल से अब समाज का पढ़ा लिखा वर्ग भी खुद को विश्लेषणात्मक पक्षपात से नहीं बचा पा रहा और जो बच रहा है वो एक सीमित वर्ग है जो सच्चाई जानने का इच्छुक है और स्वयं को प्राथमिक स्रोतों पर निर्भर रखता है।

इसके लिए 'पोस्ट ट्रुथ' जिसका अर्थ है ऐसी परिस्थितियां, जिनमें जनमत को आकर देने में उद्देश्यहीन पर प्रभावशाली, फिर भावनात्मक और व्यक्तिगत विश्वास की अपील की जाती है आज प्रचलित है। इसका एक सटीक उदहारण है कि जब संयुक्त राज्य अमेरिका में चुनाव के समय श्री डोनाल्ड ट्रम्प को पोप का समर्थन दिखाया गया और श्रीमति हिलेरी क्लिंटन को आई एस आई एस से जोड़ा गया और इसको फैलाने के लिए हजारों की संख्या में मेसेडोनिया से फेक वेब साईट बनाई गई।

ऑनलाइन एब्यूज, ट्रोल और क्राइम के स्तर में लगातार बढ़ोतरी को देखते हुए केंद्र सरकार ने सोशल मीडिया और ओवर–द–टॉप (OTT) प्लेटफार्म के लिए गाइडलाइंस जारी की, इस नई गाइडलाइंस के दायरे में फेसबुक, ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और नेटफ्लिकस, ऐमजॉन प्राइम, हॉटस्टार आएंगे।

सोशल मीडिया और ओवर–द–टॉप (OTT) प्लेटफॉर्म के लिए गाइडलाइंस के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं–

इसके अंतर्गत दो तरह की कैटिगरी हैं–

1) सोशल मीडिया इंटरमीडियरी

2) सिग्निफिकेंट सोशल मीडिया इंटरमीडियरी

♦ सबको ग्रीवांस रीड्रेसल मैकेनिज्म बनाना पड़ेगा जिसमे 24 घंटे में शिकायत दर्ज होगी और उस शिकायत को 14 दिन में निपटाना होगा।

♦ यूजर्स विशेषकर महिलाओं के सम्मान से खिलवाड़ की शिकायत हुई तो 24 घंटें में कंटेंट हटाना होगा।

♦ सिग्निफिकेंड सोशल मीडिया को चीफ कम्प्लायंस ऑफिसर रखना होगा जो भारत का निवासी होगा।

♦ एक नोडल कॉन्टैक्ट पर्सन रखना होगा जो कानूनी एजेंसियों के संपर्क में 24 घंटे रहेगा, तथा मंथली कम्प्लायंस रिपोर्ट जारी करनी होगी।

♦ सोशल मीडिया पर कोई आपराधिक हरकत सबसे पहले किसने की, इसके बारे में सोशल मीडिया कंपनी को बताना पड़ेगा।

♦ हर सोशल मीडिया कंपनी का भारत में एक पता होना चाहिए।

♦ हर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के पास यूजर्स वेरिफिकेशन की व्यवस्था होनी चाहिए।

ओवर द टॉप की इन गाइडलाइन्स ने अभद्रता, अश्लीलता और फेक नेरेटिव पर निश्चित ही एक लगाम लगाने का काम किया है। भविष्य में इसका असर तो देखने को मिलेगा ही साथ में ये भी सोचने का अवसर भी मिलेगा की सुविधाओं की सुलभता के साथ केवल अधिकार ही प्राप्त नहीं होते, एक सामाजिक दायित्व का वहन भी अनिवार्य हो जाता है जिसे जन सरोकार की पत्रकारिता अनवरत गतिशील रहें। ■

महिलाएं और आत्मनिर्भरता

डॉ. दीक्षिता अजवानी
असिस्टेंट प्रोफेसर
गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

आधी आबादी कही जाने वाली महिलाएं किसी भी देश के सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक विकास की रीढ़ होती है। किसी भी देश, समाज के विकास के पीछे महिलाओं का विशेष योगदान होता है इसलिए महिलाओं की भागीदारी और संलग्नता के बिना हम देश या समाज की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं।

इतिहास से वर्तमान तक ऐसा कोई समय नहीं रहा है जब किसी परिवार से देश तक की अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान पुरुषों से कम रहा हो, चाहे घर गृहस्थी चलाना हो या बाहर निकल कर नौकरी व्यवसाय हो। पिछले कुछ दशकों और विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों में भारतीय महिलाओं ने देश के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की है। वर्तमान परिस्थितियों में कोरोना की इस महामारी के काल में जब विश्व अपनी आंतरिक समस्याओं, वेरोजगारी, भुखमरी, चिकित्सा और कई अन्य समस्याओं से जूझ रहा है और भारत भी इससे अछूता नहीं है। निःसंदेह ऐसे समय में महिलाओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

इन विकट समस्याओं से लड़ने और देश की अर्थव्यवस्था को वापस पटरी पर लाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' की ऐतिहासिक अवधारणा भारत के समक्ष रखी है। "आत्मनिर्भर भारत" बनने का तात्पर्य यह है कि हमारे देश को हर क्षेत्र में खुद पर निर्भर रहना होगा। भारत को देश में ही अधिकांश वस्तुओं का निर्माण करना होगा। आत्मनिर्भर भारत के इस अभियान का मुख्य उद्देश्य यह है कि भारत के संसाधनों से बनी वस्तुओं को उपयोग में लाया जाए जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। इससे उद्योगों की संख्या में वृद्धि होगी। दूसरे देशों की सहायता कम लेनी होगी। रोजगार के अधिक अवसर होंगे जिससे बेरोजगारी के साथ गरीबी से मुक्ति मिलेगी कम आयात और अधिक निर्यात से आर्थिक स्थिति सबल बनेगी।

अन्य शब्दों में आत्मनिर्भरता का अर्थ है स्वयं पर निर्भर रहना अर्थात किसी और पर आश्रित न होना। इस स्थिति हेतु महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। महिलाओं का अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत योगदान रहता है। चाहे सिलाई–बुनाई, आम–पापड, खिलौने बनाना, कुटीर उद्योगों के कामों में संलग्नता हो या अपनी शैक्षिक योग्यताओं के अनुसार नौकरी, व्यवसाय, महिलाओं की भागीदारी से न सिर्फ शिक्षित बल्कि कम पढ़ी–लिखी व अशिक्षित महिलाएं भी घर के काम कर रही है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है। ये सर्वविदित तथ्य है कि जब महिलाएं घर और बाहर के काम करेंगी तो सक्रिय कार्यबलों में शामिल होकर देश की अर्थव्यवस्था मजबूत करने के साथ स्वयं के परिवार का रहन–सहन का स्तर भी मजबूत करेगी। वूमन बिजनेस एंड लॉ 2020 (WBL इंडेक्स) जो कि देशों के कानून और नियामकों का महिलाओं पर उनके अर्थव्यवस्था में योगदान पर पड़ने वाले असर को देखते हुए तय किया गया। WBL इंडेक्स के मुताबिक औसत वैश्विक अंक 75. 2 था। जिसमें भारत में 74.4 का अंक था। भारत का स्थान 190 देशों में 117 वां है हालांकि पहले के मुकाबले यह बेहतर है परन्तु इसमें सुधार अपेक्षित है। हाल ही में जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) 2018–19 के अनुसार कार्यक्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में गिरावट हुई है। रिपोर्ट के अनुसार अक्टूबर–दिसम्बर 2019 में महिला बेरोजगारी की दर 9.8 प्रतिशत रही जो 2019 में जुलाई–सितम्बर की तिमाही के आंकड़ों से अधिक है।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी 60 प्रतिशत है परन्तु इनमें से अधिकांश भूमिहीन श्रमिक है। इसी प्रकार विनिर्माण क्षेत्र (लगभग पूरी तरह असंगठित) में महिला श्रमिकों की भागीदारी लगभग 14 प्रतिशत ही है। सेवा क्षेत्र में भी अधिकांश महिलाएं कम आय वाली नौकरियों तक सीमित है। इसका एक प्रमुख कारण समाज की मुख्यधारा में महिलाओं की कार्यक्षेत्रों में उपस्थिति को लेकर उदासीन है।

वहीं महिलाओं की आत्मनिर्भरता से यदि भारत में एक कार्यक्षेत्र में व्याप्त होती असमानता ने 25 प्रतिशत कम कर लिया जाए तो इनसे भारत की जीडीपी में 1 ट्रिलियन डॉलर तक की वृद्धि हो सकती है। यही नहीं महिलाओं की आत्मनिर्भता से सामजिक व आर्थिक सकारात्मक प्रभाव घर, समाज व देश की अर्थव्यवस्था पर भी देखने को मिलता है। इस आधी आवादी के अस्तित्व व भूमिका पर विशेष ध्यान और प्रोत्साहन से ही भारत "आत्मनिर्भर भारत" में ध्येय को पूरा कर विश्व गुरु बन सकता है। ■

केशव संवाद मार्च अंक की समीक्षा एवं विमोचन कार्यक्रम

केशव संवाद पत्रिका का मार्च अंक साहित्य समाज और मीडिया के विमर्शों एवं सरोकारों को इस अंक में समायोजित किया गया। इस अंक के साथ स्थायी स्तंभ लेखक की नई शुरुआत हुई। लेखकों ने पूरी गंभीरता एवं अन्वेषण के साथ अपने लेख दिये, जो न केवल समसामयिक थे, वरन् पूर्ण मनन से भी लिखे गए थे। ज्ञातव्य है कि साहित्य एवं मीडिया समाज को दिशा देने के साथ ही राष्ट्रनिर्माण में अपनी भूमिका का निवर्हन भी करते हैं। इस अंक में ऐसे ही विषयों को प्रमुखता से समाहित किया गया है।

डॉ. विशेष गुप्ता जी बाल पत्रकारिता और मीडिया दायित्व में लिखते हैं कि पत्रकारिता बाल मनोभावों के अनुकूल होनी चाहिए। डॉ. अनिल निगम जी राष्ट्रध्वज का अपमान एक सुनियोजित साजिश लेख में राष्ट्रीय चिन्हों के अपमान को लेकर खिन्नता व्यक्त करते हैं। अनुपमा अग्रवाल जी इलैक्ट्रोनिक मीडिया में शुचिता का अभाव शीर्षक लेख में मीडिया की जबाबदेही तय करने की बात लिखती है। प्रो. आराधना जी "सशक्त महिला : सशक्त समाज लेख में महिला सशक्तीकरण को राष्ट्र निर्माण हेतु आवश्यक मानती है। राजेन्द्र सिंह बघेल जी आइये बात करें लेख में मनुष्य के लिए सम्प्रेषणीयता की आवश्यकता बताती है। अरुण कुमार सिन्हा जी मानव सनातन संस्कृति लेख में सनातन संस्कृति के प्रयोजनों एवं रिवाजों पर मत व्यक्त करते हैं। डॉ. अखिलेश मिश्र जी कोरोना वैक्सीन एवं वैश्विक आर्थिक परिदृश्य लेख में 2021 के वैश्विक परिदृश्य की चर्चा करते हैं। डॉ. मनमोहन सिंह जी ने विज्ञान और प्रौद्योगिक के सामाजिक सरोकारों पर लेखनी चलायी। डॉ. नीरजा शर्मा जी ने भारतीय संस्कृति के सामाजिक सरोकार लेख में गौरवशाली भारतीय संस्कृति का विवेचन किया है। डॉ. नीलम कुमारी जी ने भारत की प्रथम शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले जी के जीवन चरित्र का उल्लेख किया है। डॉ. प्रियंका सिंह साहित्य और युवा लेख में युवाओं पर साहित्य के प्रभाव को इंगित करती है विजय शर्मा जी मौलिकता ही जीवन है में मौलिकता को साधना, उल्लास और जीवन जीने का मार्ग बताते हैं। डॉ. गीता पांडे जी सूचना क्रांति अधिकार ही नहीं जिम्मेदारी भी लेख में सूचनाओं की प्रामाणिकता पर सवाल करती है। डॉ. प्रताप निर्भय सिंह जी ने राष्ट्रवाद, भारतीयता और पत्रकारिता शीर्षक पुस्तक की सटीक समीक्षा प्रस्तुत की है।

डॉ.उर्विजा शर्मा सामाजिक जागरूकता में साहित्य और मीडिया लेख में समाज पर साहित्य और मीडिया के प्रभाव को इंगित करती है। डॉ. शिल्पी जिंदल अपने लेख भूमंडलीकरण में सामाजिक– सांस्कृतिक सरोकार में वैश्वीकरण के प्रभावों की चर्चा करती है। डॉ. धीरज सिंह जी ने अपने लेख में भारतीय स्वराज के प्रणेता बालगंगाधर तिलक में तिलक जी के योगदान को इंगित किया है। डॉ. रीना शर्मा जी अपने लेख प्रिंट मीडिया की समीक्षा में मीडिया को लोकतंत्र का प्रहरी बताया है। श्री अजीत कुमार पांडे ने आध्यात्मिक उन्नयन में मीडिया और साहित्य की भूमिका पर विचार दिये हैं। श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने साहित्य समाज का दर्पण है लेख में साहित्य की प्रासंगिकता को अभिव्यक्त करते हैं।

पत्रिका के मार्च अंक का ऑनलाइन विमोचन किया गया। विमोचन कार्यक्रम में रायबरेली उत्तर प्रदेश की विधायक सुश्री अदिति सिंह, केशव संवाद पत्रिका की प्रमुख डॉ. प्रियंका सिंह, केशव संवाद पत्रिका के संपादक मंडल की सदस्य डॉ. नीलम कुमारी व केशव संवाद पत्रिका के अंक संपादक डॉ. उर्विजा शर्मा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. नीलम सिंह जी ने कहा कि साहित्य, समाज और मीडिया यह तीनों शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं, एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और इन तीनों में परस्पर गहरा संबंध है। जहां एक और साहित्य समाज का दर्पण है वहीं दूसरी ओर मीडिया लोकतांत्रिक समाज का सबसे मजबूत स्तंभ है। साहित्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना ही नहीं बल्कि समाज को दिशा देना भी है वही मीडिया का मात्र उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं बल्कि समाज को जागृत करना भी है। जहां एक ओर मीडिया का अभिप्राय समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि से लिया जाता है वहीं दूसरी ओर लिखित शब्द, कविता, कहानी, उपन्यास एवं नाटक साहित्य की विधा है। अगर देखा जाए तो मीडिया साहित्य और समाज में सेतु निर्माण करने का कार्य करता है। इन तीनों का मिश्रण ही राष्ट्र को गति प्रदान करता है और समाज के सतत् विकास के लिए सकारात्मक साहित्य और मीडिया दोनों का ही विशेष महत्व है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री अदिति सिंह जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि युवा नेता एक अलग तरह की राजनीति कर रहे हैं। युवा पीढ़ी अपने रास्ते पर अच्छे से चल रही है और लोग उन्हें सपोर्ट भी कर रहे हैं। युवा नेताओं को अच्छी शिक्षा मिली है जिससे वे अपना कार्य अच्छे से कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई नेता समाज के लिए अच्छा काम करता है तो उसे मीडिया में बहुत कम जगह मिलती है जबकि नेता द्वारा कुछ गलत हो जाए तो उसे बहुत बड़ी जगह मीडिया में मिलती है। मीडिया समाज का आइना होता है इसलिए मीडिया का सकारात्मक होना बहुत जरूरी है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही डॉ. प्रियंका सिंह जी ने कहा कि साहित्य से राष्ट्र की गरिमा, उसकी संस्कृति, उसकी सभ्यता, उस राष्ट्र की प्राचीन परंपरा, रहन–सहन आदि सभी की जानकारी हमें प्राप्त होती है। मानव के विकास में साहित्य का योगदान अहम है मानव का भौतिक विकास तो स्वभावतः ही हो जाता है लेकिन उसके बौद्धिक विकास के लिए साहित्य की भूमिका अहम है। साहित्य हमें एक दृष्टि प्रदान करता है जिससे हम सामाजिक व्यक्तिगत घटनाओं को विचार पूर्वक संपूर्णता और समग्रता से देखते हुए महसूस कर सकते हैं और इन्हीं सभी पहलुओं को समाहित करता हुआ यह केशव संवाद का अंक है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साहित्य, समाज और मीडिया अंक की संपादक डा. उर्विजा शर्मा जी ने कहा कि साहित्य अपने समाज, अपने समय और अपनी संवेदना को व्यक्त करता है। मीडिया माध्यम मात्र है। -डॉ. उर्विजा शर्मा

संघ संस्थापक डा. हेडगेवार जी की जयंती पर शत् शत् नमन

महावीर सिंघल
वरिष्ठ लेखक

विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को आज कौन नहीं जानता? भारत के कोने–कोने में इसकी शाखाएँ हैं। विश्व में जिस देश में भी हिन्दू रहते हैं, वहाँ किसी न किसी रूप में संघ का काम है। संघ के निर्माता डा. केशवराव हेडगेवार का जन्म एक अप्रैल, 1889 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वि. सम्वत् 1946) को नागपुर में हुआ था। इनके पिता श्री बलिराम हेडगेवार तथा माता श्रीमती रेवतीवाई थीं।

केशव जन्मजात देशभक्त थे। बचपन से ही उन्हें नगर में घूमते हुए अंग्रेज सैनिक, सीताबर्डी के किले पर फहराता अंग्रेजों का झण्डा यूनियन जैक तथा विद्यालय में गाया जाने वाला गीत 'गॉड सेव दि किंग' बहुत बुरा लगता था। उन्होंने एक बार सुरंग खोदकर उस झंडे को उतारने की योजना भी बनाई पर बालपन की यह योजना सफल नहीं हो पाई। वे सोचते थे कि इतने बड़े देश पर पहले मुगलों ने और फिर सात समुन्दर पार से आये अंग्रेजों ने अधिकार कैसे कर लिया? वे अपने अध्यापकों और अन्य बड़े लोगों से बार–बार यह प्रश्न पूछा करते थे। बहुत दिनों बाद उनकी समझ में यह आया कि भारत के रहने वाले हिन्दू असंगठित हैं। वे जाति, प्रान्त, भाषा, वर्ग, वर्ण आदि के नाम पर तो एकत्र हो जाते हैं। पर हिन्दू के नाम पर नहीं। भारत के राजाओं और जमीदारों में अपने वंश तथा राज्य का दुराभिमान तो है। पर देश का अभिमान नहीं। इसी कारण विदेशी आकर भारत को लूटते रहे और हम देखते रहे। यह सब सोचकर केशवराव ने स्वयं इस दिशा में कुछ काम करने का विचार किया।

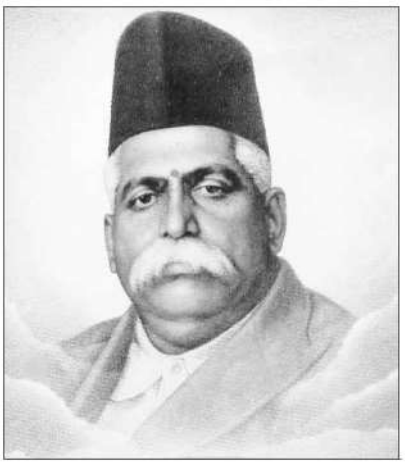

उन दिनों देश की आजादी के लिए सब लोग संघर्षरत थे। स्वाधीनता के प्रेमी केशवराव भी उसमें कूद पड़े। उन्होंने कोलकाता में मैडिकल की पढ़ाई करते समय क्रान्तिकारियों के साथ और वहाँ से नागपुर लौटकर कांग्रेस के साथ काम किया। इसके बाद भी उनके मन को शान्ति नहीं मिली।

सब विषयों पर खूब चिन्तन और मनन कर उन्होंने नागपुर में 1925 की विजयादशमी पर हिन्दुओं को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। गृहस्थी के बन्धन में न पड़ते हुए उन्होंने पूरा समय इस हेतु ही समर्पित कर दिया। स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रियता बनी रही तथा 1930 में जंगल सत्याग्रह में भाग लेकर वे एक वर्ष तक अकोला जेल में भी रहे।

उन दिनों प्रायः सभी संगठन धरने, प्रदर्शन, जुलूस, वार्षिकोत्सव जैसे कार्यक्रम करते थे। पर डा. हेडगेवार ने दैनिक शाखा नामक नई पद्धति का आविष्कार किया। शाखा में स्वयंसेवक प्रतिदिन एक घंटे के लिए एकत्र होते हैं। वे अपनी शारीरिक स्थिति के अनुसार कुछ खेलकूद और व्यायाम करते हैं। फिर देशभक्ति के गीत गाकर महापुरुषों की कथाएं सुनते और सुनाते हैं। अन्त में भारतमाता की प्रार्थना के साथ उस दिन की शाखा समाप्त होती है।

प्रारम्भ में लोगों ने इस शाखा पद्धति की हँसी उड़ायी। पर डा. हेडगेवार निर्विकार भाव से अपने काम में लगे रहे। उन्होंने बड़ों की बजाय छोटे बच्चों में काम प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे शाखाओं का विस्तार पहले महाराष्ट्र और फिर पूरे भारत में हो गया। अब डा. जी ने पूरे देश में प्रवास प्रारम्भ कर दिया। हर स्थान पर देशभक्त नागरिक और उत्साही युवक संघ से जुड़ने लगे।

डा. हेडगेवार अथक परिश्रम करते थे। इसका दुष्प्रभाव उनके शरीर पर दिखायी देने लगा। अतः उन्होंने सब कार्यकर्ताओं से परामर्श कर श्री माधवराव गोलवलकर (श्री गुरुजी) को नया सरसंघचालक नियुक्त किया। 20 जून को उनकी रीढ़ की हड्डी का ऑपरेशन (लम्बर पंक्चर) किया गया। पर उससे भी बात नहीं बनी और अगले दिन 21 जून, 1940 को उन्होंने देह त्याग दी।

इतिहास : अप्रैल

01 अप्रैल – **भारतीय रिजर्व बैंक का स्थापना दिवस**

4 अप्रैल – **जन्मतिथि :** माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 को ग्राम बाबई, जिला होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था।

05 अप्रैल – **जन्मतिथि :** बाबू जगजीवन राम का जन्म ग्राम चन्दवा (बिहार) में सन् 1908 को हुआ था।

6 अप्रैल – **इतिहास-स्मृति :** शिवाजी महाराज की तलवार से शाइस्ता खाँ इतना डर गया था कि वह भागने लगा। परन्तु तब तक शिवाजी महाराज की तलवार चल चुकी थी और वह अपनी तीन उंगली काटवा कर भाग गया था।

7 अप्रैल – **पुण्यतिथि :** 1857 के स्वाधीनता संग्राम में जो महिलाएं पुरुषों से भी अधिक सक्रिय रहीं, उनमें बेगम हजरत महल का नाम उल्लेखनीय है।

8 अप्रैल – **बलिदान दिवस :** अंग्रेजी शासन के विरुद्ध चले संग्राम का बिगुल बजाने वाले क्रांतिवीर मंगल पांडे को घायल अवस्था में ही फांसी दे दी गई थी।

10 अप्रैल – **पुण्यतिथि :** पुरावनस्पती वैज्ञानिक डा. बीरबल साहनी की पुण्यतिथि।

11 अप्रैल – **जन्मतिथि :** महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले।

12 अप्रैल – महाराजा की उपाधि से विभूषित रणजीत सिंह।

13 अप्रैल – **जलियांवाला बाग नरसंहार**– वर्ष 1919 में अमृतसर में जलियांवाला बाग नरसंहार हुआ था।

14 अप्रैल – **जन्मतिथि :** भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का जन्म सन् 1891 महू (मध्य प्रदेश) में हुआ था।

14 अप्रैल – **इतिहास स्मृति :** सुन्दर पर्वतमालाओं से घिरे मणिपुर की राजधानी इम्फाल से 45 किमी दक्षिण में लोकताक झील के किनारे मोइरांग नामक छोटा सा नगर बसा है। भारतीय स्वाधीनता समर में इसका विशेष महत्व है। यहीं पर 14 अप्रैल, 1944 को आजाद हिन्द फौज के संस्थापक नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने सर्वप्रथम तिरंगा झण्डा फहराया था।

19 अप्रैल – **युवा बलिदानी अनन्त कान्हेरे**– युवा क्रान्तिकारी अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे ने देश की स्वतन्त्रता के लिए केवल 19 साल की युवावस्था में ही फाँसी के फन्दे को चूम लिया था।

22 अप्रैल – **पृथ्वी दिवस :** विश्वभर में पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। 22 अप्रैल 1970 को पहली बार पृथ्वी दिवस मनाया गया था।

25 अप्रैल – दूरदर्शन ने देश में पहली बार वर्ष 1982 में रंगीन प्रसारण की शुरूआत की थी।

26 अप्रैल– **पुण्यतिथि :** महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन्।

29 अप्रैल – **जन्मतिथि :** सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा, भारत के सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा का जन्म सन् 1848 को केरल में हुआ था।

30 अप्रैल – **पुण्यतिथि :** हरि सिंह नलावा का जन्म सन 1791 में अमृतसर में हुआ था।

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, (उ.प्र.)

दूरभाषः 0120–4545608

ई–मेल : ssm.noida@gmail.com वैबसाइडः. www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का प्रयास।
* नवीन तकनिकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता के विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

मधुसूदन दादू	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)